उत्तम चरित्र कुमारनो रास.

श्रीजिनहर्ष सूरिकृत.

वस्त्रदान फल महात्म्य रूप.

आ

माहाप्रतापि पुरुषनो चरित्र

सज्जनोने

अवश्य वांचवा योग्य जाणीने

श्रावक भीमसिंह माणकें

श्रीमुंबा नगरी मध्ये

निर्णय सागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यो

संवत १९४२.

॥ अथ ॥

॥ वस्त्रदानोपरि श्री उत्तमचरित्र कुमाररासः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ चरम जिणेसर चित्त धरुं, करूं सदा गुणग्राम ॥ नावठ नाजे नवतणी, लीजंते जस नाम ॥ १ ॥ मन वच काया शुद्ध करी, जो कीजें जिन जाप ॥ उज्ज्वल थाये आतमा, जाये दुःख संताप ॥ २ ॥ जेहने नामें संपजे, वंछित सुख सुविशाल ॥ कष्ट निवारे करि कृपा, सेवक जन प्रतिपाल ॥ ३ ॥ समरुं सरस्वती सामिनी, सुमती तणी दातार ॥ वीणा पुस्तक धारिणी, कवियण जण आधार ॥ ४ ॥ हंसासण हंसागमणी, त्रिभुवन रूप अनूप ॥ मोह्या इंद नरिंद सहु, न लहे कोइ सरूप ॥ ५ ॥ जो माता सुप्रसन्न हुवे, आपे अनुपम ज्ञान ॥ ज्ञानथकी दर्शन हुवे, दर्शनमोक्ष विमान ॥ ६ ॥ जिन मुख पंकज वासिनी, समरी शारद माय ॥ कहुं कथा उत्तम चरित्र, सांभलजो चित्त लायं ॥ ७ ॥ नृपसुतें दीधुं नाव

ञुं, वस्त्रदान मुनिराय ॥ सुख पाम्या दाम्या अरि,
दान तणे सुपसाय ॥ ८ ॥ सरस कथा संबंध छे, सु
णजो सहु नर नार ॥ आलस उंघ प्रमाद तजी, ध
रजो चित्त मझार ॥ ९ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ इणहीज जंबुद्वीप मझार, दक्षिण भरतक्षेत्र
सुविचार ॥ नयरी अनुपम वाणारसी, त्रिभुवनमां
नही अलका इसी ॥ १ ॥ विशमो गढने विशमी पोल,
झलके रविकोशीसा उल ॥ उंचा घर मंदिर कैलास,
सप्तभूमिया जिहां आवास ॥ २ ॥ जिन मंदिर शिव मं
दिर जिहां, साधु साधवी विचरे तिहां ॥ वारु चा
रे वर्ण त्यां वसे, धर्मकरण सहु को उल्लसे ॥ ३ ॥ लो
क सुखी तिहां धनद समान, घर घर दीजें वंछित दा
न ॥ दीन दुःखीनी करे संभाल, जीव सहुना जे प्रति
पाल ॥ ४ ॥ न करे कोइ केहनी कांई तांत, जेहथी
थाये कलि उत्पात ॥ न करे परनिंदा परद्रोह, एह
वा लोक वसे कृत सोह ॥ ५ ॥ तिण नगरी मकरध्व
ज भूप, अभिनव मकरध्वज अनुरूप ॥ न्यायवंत गुण
वंत कृपाल, अरियणने लागे जेम काल ॥ ६ ॥ प
चमो लोकपाल भूपाल, देखी हरखे बालगोपाल ॥

हय गय रथ पायक जंमार, विनव तणो लाने नही पार ॥ ७ ॥ राणी जेहने लक्ष्मीवती, बुध्दिमंत जाणे सरस्वती ॥ रूपें जीती जेणें अपछरा, नमणी खमणी जाणे धरा ॥ ८ ॥ चउसठ नारी कलानिधि जाण, हंस हराव्यो गति पिक वाण ॥ जेहनुं वपु देखी उल्लस्या, उत्तम गुण आवीमनें वस्या ॥९॥ नोगवतां सुख लीलविलास, शुन मुहूरत सुत आयो तास ॥ उत्तम गुण देखी अनिराम, उत्तमचरित्र दियुं तस नाम ॥ १० ॥ बीज चंद्रनी परें कुमार, दिन दिन वाधे कलाविस्तार ॥ लीगे सहुनें आवे दाय, पूरव पुण्य तणे सुपसाय ॥ ११ ॥ बालपणे पण दया विशाल, न करें केहने हरठर मार ॥ सत्यवादी मुख अमृतवाण, न्यायवंत बहु गुणनो खाण ॥ १२ ॥ शस्त्र शास्त्रनी शीखी कला, धर्मशास्त्र शीख्यां निर्मला ॥ न लीये जेह अदत्तादान, परस्त्री जाणे बेहेन समान ॥ १३ ॥ नगति करे जिनवरनी घणी, गुरुनी नगति करे सुख नणी ॥ एहवो कुमर गुणें सुकमाल, कहे जिनहर्ष प्रथम थइ ढाल ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कला बहोंतेर जे नण्यां, पंमितनाम धराय ॥

धर्मकला आवी नहिं, तो मूरखना राय ॥ १ ॥ अव
र सर्वे विकला कला, धर्मकला शिरदार ॥ धर्मकला
विण मानवी, पशुतणे अवतार ॥ २ ॥ रात दिवस
धर्में रमे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ सुखदायी सहु जो
कर्में, यश विस्तर्यो अपार ॥ ३ ॥ एक दिन मनमां
चिंतवे,हुं हवे थयो जुवान ॥ बाप तणुं धन जोगवुं,
एम तो न लहुं मान ॥ ४ ॥ बापतणुं धन बालप
ण, खातां खोट न कांइ ॥ तरुणपणें जो जोगवे, तो
पुरुषातन जाय ॥ ५ ॥ सोल वरस वोल्यां पछे, न
करे जो असार ॥ बाप तणी आशा करे,धिक जनमा
रो तास ॥ ६ ॥ सिंह सिंचाणो शा पुरुष, न करे प
रनी आश ॥ निज जुज खाट्युं खाइयें,तो लहियें जश
वास ॥ ७ ॥ जण न कहायो जगतमां, बालपणें प
शवास ॥ पशु हूआ ते बापडा, पडिया खावे घास
॥ ८ ॥ करुं परीक्षा कर्मनी, जोउं देश विदेश ॥ ख
ड्ग लेइ निशि चालियो, धरतो हरख विशेष ॥ ए ॥

॥ ढाल बीजी ॥ मारुं मन मोह्युं
रे वप्रानंदशुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ कर्म परिक्षा रे करण कुमर चल्यो रे, धरतो म
नमां उत्साह ॥ साथें लीधो रे जाग्यसखायीयो रे

धीरजवंत गजगाह ॥ १ ॥ क० ॥ रणवनवासी गाम नगर फरे रे, जोतो ख्याल अपार ॥ नमतो नमतो चित्रकूट आवियो रे, एकलडो शिरदार ॥ २ ॥ क० ॥ मह्सिेन राजा रे तेणे पुर राजियो रे, देश जेह्नो मेदपाट ॥ जेह्ने पोतेरें बाणुं लख मालवो रे, मरु मंमल करणाट ॥३॥क०॥ देशघणाना रे नरपति उलंगे रे, पुह्वी प्रबल प्रताप ॥ निशदिन लीणोरे रहे जिन धर्मशुं रे, जाणे राज्य संताप ॥४॥क०॥ पुत्र नहीं रे राजधुरा धरें रे, केह्ने आपुं राज ॥ योग्य नही रे कोइ राज्य पालवा रे, छोडंतां पण लाज ॥ ५ ॥ क० ॥ उत्तम कोइ रे जो पुण्यवंत मिले रे, तो तेह्ने देउं नार ॥ नियत करुं रे आतम साधना रे, लेउं लेउं संजम नार ॥ ६ ॥ क० ॥ एक दिन राजा रे रमवा निसस्यो रे, साथें बहु परिवार ॥ नव वय वारु रे लक्कण सुंदरू रे, थइ घोडे असवार ॥७॥ क० ॥ नवल वछेरो रे चंचल गति नहीं रे, पूछे मंत्रीने नृप ॥ कहो केम मंदगति ए अश्वनी रे, कोइ न जाणे स्वरूप ॥ ८ ॥ क० ॥ वली वली पूछे रे कोइ बोले नही रे, कोइ न नाखे विचार ॥ राय समीपें रे अश्व निहालीनें रे, आव्यो उत्तम कुमार

॥ ए ॥ क० ॥ कुमर पयंपे रे सुणो माहारायजी रे, एणे पियुं महिषीनुं दूध ॥ मंदगति थइ रे तेणे ए किशोरनी रे, नहीं गति चंचल शुद्ध ॥ १०॥ क० ॥ पशु महिषीनुं रे धाये वायडुं रे, वायें गति नारे होय ॥ तुं केम जाणे रे वत्स राजा कहे रे, ज्ञानी चतुर छे कोय ॥ ११ ॥ क० ॥ अश्वपरीक्षा रे जाणुं रायजी रे, उत्तमचरित्र कहे ताम ॥ राय कहे रे साचुं तें कह्युं रे, लघुवय विद्याधाम ॥ १२ ॥ क० ॥ बालपणाथी रे एहनी मा मुइ रे, बालक कांइ न खाय ॥ महिषी दूधें रे एह उछेरियो रे, तें नाख्युं ते न्याय ॥ १३ ॥क०॥ गुण देखीने रे उत्तमकुमारना रे, हर्षित थयो रे नृपाल ॥ बीजी पूरी रे थइ छे एटले रे, कहे जिन हर्ष ए ढाल ॥१४॥क०॥ सर्वगाथा ॥४६॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरतणा गुण देखीने,रीझ्यो चित्त नरेश ॥ राजकुमर छे ए सही, निकलियो परदेश ॥ १ ॥ जोतां ए जुगतो मिल्यो,राजकाज समरछ ॥ एहने राज्य देइ करी, साधुं हुं परमछ ॥ २ ॥ सांभल हो तुं शापुरुष, लइयें माहारुं राज ॥ हुं दीक्षा लेइश हवे, सारिश आतम काज ॥ ३ ॥ भाग्य संजोगें मुज भणी,

तुं मंत्रियो गुणवंत ॥ ए लखियो छे ताहरे, वरवतें राज्य महंत ॥४॥ जेहने जेहवुं जोग्यता, तेहने तेह वुं होय ॥ कानें कुंमल रयणमय, नयणें काजल जोय ५

॥ ढाल त्रीजी ॥ नेम लालन मोरे
मन वस्यो ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरकहे सुणतातजी, तुह्मे कह्युं ते प्रमाणो रे ॥ पण मुज आगल जायवुं, करवा काम कल्याणो रे ॥ १ ॥ कु० ॥ काम करीनें आवशुं, वलतुं कह्युं क रेशुं रे ॥ जे देश्यो सुप्रसन्न थइ, ते ततक्षण हुं लेश्युं रे ॥ २ ॥ कु० ॥ एम कही राय चरण नमी, कीधुं कुमर प्रयाणो रे ॥ पुहवी अचरिज जोवतो, जोतो विविध विनाणो रे ॥ ३ ॥ कु०॥ भमतो भमतो अ नुक्रमें, भरुयछ नयरें आयो रे ॥ पुरनी शोभा जोव तो, हैडे हर्षित थायो रे ॥ ४ ॥ कु० ॥ श्रीमुनिसुव्रत देहरे, जइ प्रणम्या जिनराजो रे ॥ भाव भक्ति स्तव ना करे, धन्य दिवस मुज आजो रे ॥५॥कु०॥ मूरति प्रभु मनमोहिनी, आर्त्ति जगत समावे रे ॥ जनमन आनंदकारिणी, दीठा स्वामी सुहावे रे ॥ ६ ॥कु०॥ वंछित दान कलपलता, भवदुःख सायर नावो रे ॥ मू रति अमृतस्पंदिनी, जागे समकित भावो रे ॥ ७ ॥

॥ कु० ॥ तुं जगबंधव जगधणी, तुं जग दीन दया ळो रे ॥ तुं जगतारक जगपति, करुणावंत कृपाळो रे ॥ ७ ॥ कु० ॥ श्री जिनराज जुहारीने, आयो साय र तीरो रे ॥ एणे अवसर व्यवहारियो, कुबेरदत्त स धीरो रे ॥ ए ॥ कु० ॥ नूरि वाहण तेणें पूरियां, म गधद्वीप जणी आयो रे ॥ अष्टादश जोजन सयां,ले इ सुनट सखायो रे ॥ १० ॥ कु० ॥ कुमर नमरप ण कौतुकी, कुबेरदत्त संघातो रे ॥ वाहण वेगे जो यवा, वारिधि ख्याल विख्यातो रे ॥ ११ ॥ कु० ॥ वाह ण चाल्यां शुन दिनें, शकुन लेइ श्रीकारो रे ॥ केट लेक दिवसें गये, खूटयो वारि विचारो रे ॥ १२ ॥ ॥ कु० ॥ शून्यद्वीप जलकारणें, लोकें वाहण ढोयां रे ॥ सहु उतरिया जहाजथी,जलनां स्थानक जोयां रे ॥ १३ ॥ कु० ॥ लोक संग्रह जलनो करे, हवे ते णे द्वीप मजारो रे ॥ नमरकेतु राक्षस रहे, निर्दय क्रूर अपारो रे ॥ १४ ॥ कु० ॥ ठ सहससेंती परिव र्यो, आव्यो तिहां कृतांतो रे ॥ जाल्या लोक सहू तेणें, थया मनमां नयभ्रांतो रे ॥ १५ ॥ कु० ॥ केइ नर जाल्या काखमां, केइ नर जाल्या हाथो रे ॥ केइ पगमांहे चांपी रह्यो, नाठा केइ अनाथो रे ॥ १६ ॥

॥ कु० ॥ केइ वाहण चडी चालिया, कुमर एकाकी वीरो रे ॥ सत्त्ववंत उपगारियो,सहु मूकाव्या सधीरो रे ॥ १७॥ कु०॥ राक्षसशुं युद्ध मांमियुं, उत्तम चरित्र कुमारें रे ॥ कहे जिनहर्ष .कुमर लडथो, त्रीजी ढाल मझारो रे ॥ १८ ॥ कु० ॥ सर्वगाथा ॥ ६ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ युद्ध करतां जीत्यो कुमर,हाख्यो असुर पलाद ॥ सैन्य सहित नासी गयो, ए ए पुण्य प्रसाद ॥ १॥ कुमर सिंधुतट आवियो,खेडी गया जिहाज ॥ चतुर चित्तमां चिंतवे, लोकमांहे नहीं लाज ॥ २ ॥ में छोडाव्या सहु नणी,कीधो में उपकार ॥ सहुने राख्या जीवता, कृतघ्नी थया अपार ॥ ३ ॥ मुजने मूकीने गया, नरदरिया मजार ॥ सहुको आपसवारथी,खोटो ए संसार ॥ ४॥ मुख मीठा जूठा हिये, रखे पतिजो कोय॥ जसु कीजें उपगारडो,सो फरी वैरी होय ॥५॥

॥ ढाल चोथी ॥ अलबेलानी देशी॥

॥ कुमर विचारे चित्तमां रे लाल, लोक तणो श्यो दोष॥ उपगारीरे॥ नय व्याकुल न खमी शक्या रे लाल, राक्षस केरो रोष॥ उपगारी रे ॥१॥कु०॥ जन्मांतर कीधां होशे रे लाल, में केइ विरुआं पाप ॥

॥ उ० ॥ तेह कर्म आव्या उदे रे लाल, पाम्या एह संताप ॥ उ० ॥ २ ॥ कु० ॥ एंहवुं चिंतवी चित्त मां रे लाल, ध्वज बांधी एक वृक्ष ॥ उ०॥ वन फल खातो तिहां रेहे रे लाल, साहसवंत सुदक्ष ॥ उ०॥ ॥ ३ ॥ कु० ॥ द्वीप तणी अधिवासिनी रे लाल, देवीयें दीठो ताम ॥ उ० ॥ कुमर रूप रलियामणुं रे लाल, जाणे अभिनव काम ॥ उ० ॥ ४ ॥ कु० ॥ कामराग व्यापत थइ रे लाल, निपट कुमरनी पास ॥ उ० ॥ आवीने एणि परें कहे रे लाल, वारु वच न विलास ॥ उ० ॥ ५ ॥ कु० ॥ सांभल हो नर सा हसी रे लाल, हुं देवी एणे द्वीप ॥ उ० ॥ रूपें मो ही ताहरे रे लाल, आवी तुज समीप ॥ उ० ॥ ६॥ ॥ कु० ॥ ए तो पुण्यें पामियें रे लाल, सुरनारी संयो ग ॥ उ० ॥ तुं प्रीतम हुं पदमिणी रे लाल, मुजशुं भोगव भोग ॥ उ० ॥ ७ ॥ कु०॥ तुजने मलवा मा हरुं रे लाल, हियडुं धरे उल्लास ॥उ०॥ ल्यो लाहो जोबन तणो रे लाल, पूरो मुज मन आश ॥ उ०॥ ॥ ८ ॥ कु० ॥ रूप निहाली ताहरुं रे लाल, गुण देखी सुविलास ॥ उ० ॥ मन चंचल तुज वांसे थयुं रे लाल, क्षण मेल्हे नहीं पास ॥ उ० ॥ ए ॥ कु०॥

मन थाये छे व्याकुलुं रे लाल, धीज न खमणी जाय ॥ उ० ॥ काया मेलो दे हवे रे लाल, घणे कह्ये शुं थाय ॥ उ० ॥ १० ॥ कु० ॥ कुमर कहे देवी सुणो रे लाल, म कहीश एहवी वात ॥उ० ॥ किहां देवी किहां मानवी रे लाल, सरिखी न मले धात ॥उ०॥ ॥ ११ ॥ कु० ॥ परनारी मुज बहेनडी रे लाल, पर नारी मुज मात ॥उ०॥ हुं बंधव परनारीनो रे लाल, साची मानो वात ॥ उ० ॥ १२ ॥ कु० ॥ परनारी जे भोगवे रे लाल, भलो न भाखे कोय ॥ उ० ॥ एणे भव अपजश तेहनुं रे लाल, परभव दुर्गति हो य ॥ उ० ॥ १३ ॥ कु० ॥ हुं छोरु छुं ताहरो रे ला ल, तुं छे माहारी माय ॥उ०॥ शरणे आव्यो ताहरे रे लाल, कर रक्षा सुपसाय ॥ उ० ॥ १४ ॥ कु० ॥ रीशाणी देवी कहे रे लाल, कां रे मूढ गमार ॥उ०॥ माय बहेन मुजने कहे रे लाल,सगपण किशो विचार ॥ उ० ॥ १५ ॥ कु० ॥ कह्युं करीश नही माहरुं रे लाल,देइश तुजने दुःख ॥उ०॥ जो जाणे हुं जीवतो रे लाल, मुजश्युं भोगव सुख ॥ उ० ॥ १६ ॥ कु० ॥ हुं तूठी तुजने दियुं रे लाल, अरथ गरथ भंडार ॥ ॥ उ०॥ रूठी तो हुं तुज भणी रे लाल, मारीश खड

ग प्रहार ॥ ज० ॥ १७ ॥ कु०॥ कुमर जणी बीही व राववा रे लाल, रूप कीधुं विकराल ॥ज०॥ कहे जिन हर्ष सुणो हवे रे लाल, ए चोथी थइ ढाल ॥ ज० ॥ ॥ कु० ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ ए२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ काढी खड्ग कहे सुरी, कांरे मरे निटोल ॥ हितकारण तुजने कहुं, मान मान मुज बोल ॥ १ ॥ मुआ मां कांइ नथी, जीवंतां कल्याण ॥ शुं जाये ठे ताहरुं, करेज खांचाताण ॥ २ ॥ कुमर कहे कर जोडिने, सांजल मोरी माय ॥ मुजथी एहवुं नवि होवे, क्यारें ए अन्याय ॥ ३ ॥ सुधापानथी जो मरे, चंइ पडे अंगार ॥ तो पण हुं परनारीने, न करुं अंगीकार ॥ ४ जो जाणे तो मार तुं, जो जाणे तो तार ॥ आगल पाछल सहु जणी, मरवुं ठे एकवार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ बहेनी रही न सकी तिसेंजी ॥ ए देशी ॥

॥ साहस देखी तेहनुं जी, देखी शील उदार ॥ उत्तमगुण देखी करी जी, देवी कहे तेणि वार ॥ १ ॥ सलूणा ॥ धन धन तुज अवतार ॥ तुज सरीखो कोइ नहीं जी, जोतां एणे संसार ॥ स० ॥ ध० ॥ ए आं

कणी ॥ तुज दरिसण देखीकरी जी, पवित्र थया मुज नेण ॥ श्रवण सफल थया माहरा जी, सांभली ताहरां वेण ॥ २ ॥स० ॥ प्राणथकी पण तुज भणी जी, वाल्हुं लाग्युं रे शील ॥ चित्त चूक्युं नहीं ताहरुं जी, शीलें पामीश लील ॥३॥ स० ॥ खुशी थइ देवी करे जी, स्तवना बे कर जोड ॥ आगलें मूकी कनकनी जी, रयणनी द्वादश कोड ॥ ४ ॥ स० ॥ पाय प्रणमी देवी गइ जी, समुद्रदत्त तिहां शेठ ॥ शेठ कहे मुज वाहणें जी, आवी बेसो निचिंत ॥ ५॥ स० ॥ धन लेइ प्रवहण चढ्यो जी, चाल्या समुद्र मझार ॥ भरदरिया विचें चालतां जी, खूट्यो वाहण वारि ॥ ॥ ६ ॥ स० ॥ निगरण सूकां लोकनां जी, जलविण सूकां रे होठ ॥ आकुल व्याकुल सहु थयां जी, मरवानी थइ गोठ ॥ ७ ॥ स० ॥ हा हा धिक जलचरथकी जी, अमें थया सत्त्व हीन ॥ जलचर जल पाखें मरेजी, अमें जलमांहे दीन ॥ ८ ॥ स० ॥ दीन वचन विलवे सहू जी, शुं थाशे जगदीश ॥ जल विण प्राण रहे नहीं जी, मरवुं विशवा वीश ॥ ९ ॥ ॥ स० ॥ शास्त्र नीहालीने कहे जी, निर्यामक तेणि वार ॥ वेल उतरशे नीरनी जी,हमणां ए निरधार ॥

१० ॥ स० ॥ प्रगट होशे जलकांतमय जी, पर्वत जलअस्पष्ट ॥ कूप छे तेनी उपरें जी, स्वादुवंत जल मिष्ट ॥ ११ ॥ स० ॥ परंपरायें सांभल्युं जी,वली छे शास्त्र मझार ॥ यानपात्र थापी करी जी, तिहां जइ लीजें वारि ॥ १२ ॥ स० ॥ निर्यामक वाणी सुणी जी, खुशी थया सहु लोक ॥ कहे जिन हरख कह्युं इश्युं जी, पांचमी ढाल विलोक ॥ १३ ॥ स० ॥ स र्वगाथा ॥ १११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पण एक महाभय छे इहां, भमरकेतु इणें ना म ॥ राक्षस रहे छे द्वीपमां, तेहनुं छे ए गाम ॥ १ ॥ सहस छ सय कोणप रहे, रात दिवस ते पास ॥ मा हामांस भक्षण करे, क्रूर अधिक उत्रास ॥ २ ॥ स मुद्रदेवता तेहने,शपथ कराव्यो एह ॥ तेतो तीर्ण भ क्षण करे,प्रवहण तजवा तेह ॥ ३ ॥ निज इछायें ते रहे, वचन सुण्यां श्रवणेह ॥ वात करंतां एटले, प र्वत प्रगट्यो तेह ॥ ४ ॥ लोकें कूप निहालियो, प ण राक्षसनी भीति ॥ तरष्या पण बेसी रह्या, वाह णमां चलचित्त ॥ ५ ॥

॥ ढाल ७मी ॥ इम्हर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे जल का न ल्यो रे, बेसी रह्या त
मे केम ॥ चालो थइ उतावला रे, जलविण तूटे प्रे
म ॥ १ ॥ कुमरजी । जल केम आण्युं जाय, एतो रा
क्षसनो नय थाय ॥ एतो वात विषम कहेवाय, ए
तो फोगट मरण उपाय ॥ २ ॥ कु० ॥ करुणा आ
णी लोकनी रे, उपगारी मतिमंत ॥ बाण अबाण
लेइ करी रे, बोले एम बलवंत ॥ ३ ॥ कु० ॥ वाह
णथी हवे ऊतरो रे, मत बीहो मन मांहि ॥ हुं र
क्षक बुं तुम तणो रे, राखुं राक्षस साहि ॥ ४ ॥
॥ कु० ॥ मुज आगल ए बापडो रे, एहनुं शुं छे
जोर ॥ सुर सुरपति पण माहरी, रे चांपी न शके को
र ॥ ५ ॥ कु० ॥ रात्रिचरनी नाणशुं रे, सुपनामां
पण नीति ॥ यानपात्रथी उतस्यो रे, राजवियांनी
रीति ॥ ६ ॥ कु० ॥ कुमर बाण खेंची करी रे, उनो
कूवा तीर ॥ लोक नाजन लइ आवियां रे, नरवा नि
र्मल नीर ॥ ७ ॥ कु० ॥ नाजन बांधी रांढवे रे, मू
क्युं कूप मझार ॥ कूवाथी नवि निसरे रे, एक चळुं
पण वारि ॥ ८ ॥ कु० ॥ जलनृतजल नवि नीसरे रे, इहां
कारण छे कोय ॥ पण कोइ खबर करे नहीं रे, रा

क्षसनो जय होय ॥ ए ॥ कु० ॥ एहवो कोइ बलवंत छे रे, पेशी कूवामांहे ॥ नीर करे कोइ मोकलुं रे, सहुने करे उत्साह ॥ १० ॥ कु० ॥ केणही वचन न मानियुं रे,कुमर थयो हुशीयार ॥ वारे शेठ कुमारने रे, ताहरो छे आधार ॥ ११ ॥ कु० ॥ कूवामां पेशी करी रे, हुं करुं मुगतुं नीर ॥ लोकतृषाकुल सहु मरे रे, तेणें मुज मन दिलगीर ॥ १२ ॥ कु० ॥ रज्जु विलंबी उतर्यो रे, कूवामांहे कुमार ॥ सात्विक चक्रवर्त्ति सारिखो रे, लोक तणो आधार ॥ १३ ॥ कु०॥ पण कंचननी जालिका रे, उपर छे अभिराम ॥जा०॥ छिद्रमांहेथी जल जलुं रे, दीठुं नयणें ताम ॥१४॥कु० चतुर विचारे चित्तमां रे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ कहे जिनहर्ष थयुं इश्युं रे, छठी ढाल मझार ॥ १५ ॥ ॥ कु० ॥ सर्वगाथा ॥ १३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो अहो अचरिज इश्युं, किणें निपायुं एह॥ कनक कंबानी जालिका, देखी उल्लसे देह ॥ १ ॥ उरि परि कीधी कुमर, जाली कंबा तेह ॥ जल मारग कीधो प्रगट, लोकां भणी कहेह ॥ २ ॥ जल काढो गाढा थइ, म करो हवे विलंब ॥ तृषामांहे अमृत

लह्यो, फल्यो अकालें अंब ॥ ३ ॥ जल काढी नाजन नर्यां, हवे कुमर तेणि वार ॥ कूपनींतमां बारणुं, मणि सोपानुं दार ॥ ४ ॥ देखी मनमां चिंतवे, नाग्य परीक्षा काज ॥ हुं परदेशें निसर्यो, गोडी घरनुं राज ॥५॥ चित्रकूट स्वामी तणुं, ते पण न लियुं राज ॥ मूकाव्या राक्षसथकी, लोकातणा समाज ॥ ६ ॥ पाणी में कीधुं प्रगट, सांप्रत कूप मजार ॥ तृषा गमावी लोकनी, कीधो ए उपकार ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ माहाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥

॥ कौतुक जोवा कौतुकी, चाल्यो चतुर सुजाण लाल रे ॥ वाट बांधी रे वारु चोरसें, कीजें केहां वखाण लाल रे ॥ १ ॥ कौ० ॥ मणिसोपान सोहामणां, कंचनमय प्रासाद लाल रे ॥ आगल कुमर निहालियुं, देखी थयो आल्हाद लाल रे ॥ २ ॥ कौ० ॥ बेगी पहेली नूमिका, वृद्धा नारी एक लाल रे ॥ जइने तिहां उनो रह्यो, बोली आणी विवेक लाल रे ॥ ॥ ३ ॥ कौ० ॥ कां रे मूरख मानवी, हीणपुण्य बुद्धिहीण लाल रे ॥ नूलो आव्यो जमघरें, आउखुं थयुं क्षीण लाल रे ॥ ४ ॥ कौ० ॥ कानेंही नवि सां

लह्यो, भ्रमरकेतु किनास लाल रे ॥ कुमर कहे हुं छ लखुं, में जींत्यो छे तास लाल रे ॥ ५ ॥ कौ० ॥ पूछुं तुजने मावडी, केहनो ए प्रासाद लाल रे ॥ तुं कोण केम बेठी इहां, कहे मूकी विखवाद लाल रे ॥ ६ ॥ कौ० ॥ वचन सुणी बलवंतनां, वृद्धा कहे सुण वीर लाल रे ॥ तुं सत्यवंत शिरोमणि, दीसे गुणगंभीर लाल रे ॥ ७ ॥ कौ० ॥ राक्षस द्वीप इहां ढूकडो, लंका नयरी ईस लाल रे ॥ भ्रमर केतु राक्षस बली, राज्य करे अवनीश लाल रे ॥८॥ ॥ कौ०॥ कन्या तास मदालसा, सयल कलानी जाण लाल रे ॥ लक्षण अंगें शोभतां, रूपें रति पिकवाण लाल रे ॥ ए ॥ कौ० ॥ देवकुमरीने सारिखी, एहवी नहिं कोइ अन्य लाल रे ॥ राय भणी वाल्ही घणुं, पोतें पुण्य अगण्य लाल रे ॥ १० ॥ कौ० ॥ भ्रमरकेतु नृप एकदा, नैमित्तिक पूछेह लाल रे ॥ मुज कन्या वर कोण होशे, कहे विचारी तेह लाल रे ॥ ११ ॥ ॥ कौ० ॥ एहने वर भूचर होशे, क्षत्रिय राजकुमार लाल रे ॥ हिमवंत सीमा राज्यनी, दक्षिणलंका धार लाल रे लाल रे ॥ १२ ॥ कौ० ॥ महाराजाधिराजा होशे, दल बल जास अपार लाल रे ॥ विद्या

धर नर राजवी, सेवा करशे तास लाल रे ॥ १३ ॥
॥ कौ० ॥ वयण सुणीने तेहनां, खेद लह्यो नूपाल
लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष किस्युं हुश्ये, हाहा सात
मी ढाल लाल रे ॥ १४ ॥ कौ० ॥ सर्वगाथा ॥१५३॥

॥ दोहा ॥

॥ नूचरपुत्री परणशे, कन्या देवकुमार ॥ खेचर
इयुं खूटी गया, एहवो करी विचार ॥ १ ॥ समुद्रमां
हे पर्वत शिखर, कूपमांहे करी द्वार ॥ मोहोटो महे
ल रच्यो इहां, कोइ न जाणे सार ॥ २ ॥ कन्याने
राखी इहां, राखी मुज रखवाल ॥ पंचरतन कुमरी नणी,
दीधां ठे नूपाल ॥ ३ ॥ हुं दासी बुं तेहनी, त्रमरके
तु लंकेश ॥ धनधान्यादिक मोकले, कूपवाट सुविशे
ष ॥ ४ ॥ कूआमांहे पडण नय, जाली कनक बणा
य ॥ जतन करी राखी इहां, नूचर केम परणाय ॥ ५ ॥
॥ ढाल आठमी ॥ जीहो मिथिला नगरीनो राजियो ॥

॥ ए देशी ॥

॥ जीहो एकदिन अपर निमित्तीयो, जीहो पूठे रा
क्स तास ॥ जीहो कहेने मुज कन्या तणो, जीहो
कोण वर थाशे नास ॥ १ ॥ लंकापति पूठे तास
विचार ॥ ए आंकणी ॥ जीहो पूरवली परें तेणें कह्युं,

जीहो चढियो क्रोध अपार ॥ २ ॥ लं० ॥ जीहो अ
मरकेतु नाखे वली, जीहो केम जांणीजें तेह ॥ जीहो
नाखे ताम निमित्तियो, जीहो सांजल नृप सुसनेह
॥ ३ ॥ लं० ॥ जीहो जांत्रिक जन नखवा नणी, जी
हो तुं गयो द्वीपमकार ॥ जीहो तुजने जीत्यो एकले,
जीहो ते नर तुं अवधार ॥४॥लं०॥ जीहो मास एक
थयो तेहने, जीहो सांजली चडियो क्रोध ॥ जीहो रा
कसदल मेली करी, जीहो हणवा गयो ते जोध ॥५
॥ लं० ॥ जीहो आगल शुं थाशे हवे, जीहो ते जा
णे जगदीश ॥ जीहो कुमर विचारे ते सही, जीहो रा
कस तणो अधीश ॥ ६ ॥ लं० ॥ जीहो एतो में जा
ण्यो हवे, जीहो मुज वैरीनुं गाम ॥ जीहो घाट वाट
रोकी रह्यो, जीहो मुज मारेवा काम ॥७॥लं०॥ जीहो
कूड कपट मायावीनी, जीहो ए राक्सनी जात ॥ जी
हो जतन करी रहेवुं इहां, जीहो प्रगट न करवी वा
त ॥८॥ लं० ॥ जीहो कुमरी ताम मदालसा, जीहो
रूप कला नंमार ॥ जीहो देवनुवनथी उतरी, जीहो
जाणे देवकुमारि ॥९॥लं०॥ जीहो कुमररूप देखी क
री, जीहो मोही कुमरी ताम ॥ जीहो वदन कमल जोइ
रही, जीहो जेम दालिद्री दाम ॥ १० ॥ लं० ॥ जी

हो रायकुमर पण तेहनुं,जीहो मोह्या देखी रूप ॥ जी
हो चपल नयण चौटी गयो, जीहो जाग्यो प्रेम अ
नूप ॥ ११ ॥लं० ॥ जीहो बेहुनो राग जोइ करी, जी
हो वृद्धा नारी ताम ॥ जीहो गंधर्व विवाह करी ति
हां, जीहो परणाव्यां तेणे गाम ॥ १२ ॥ लं० ॥ जी
हो पृथिव्यादिक चारे भलां, जीहो पांचमुं रतन आ
काश ॥ जीहो प्राभाविक पांचे भलां, जीहो देवाधि
ष्ठित खास ॥ १३ ॥ लं० ॥ जीहो पांच रतन मदा
लसा,जीहो लेइ वृद्धा रे नारि ॥ जीहो आव्यो कुमर
उतावलो, जीहो तेणिहिज कूप मझार ॥ १४ ॥लं०
जीहो समुद्रदत्तना आदमी,जीहो जल काढे तिणी वा
र ॥ जीहो कहे जिन हर्ष शुं हवे, जीहो उत्तम चरि
त्रकुमार ॥ १५ ॥ लं० ॥ सर्वगाथा ॥१७२॥

॥ दोहा ॥

॥ बाहिर काढो मुज भणी, भाखे एम कुमार ॥
रज्जु प्रयोगें निसर्यां, त्रणे जण तेणि वार ॥ १ ॥ स
घले विस्मय पामियो,अचरिज थयुं अपार ॥ जलदेवी
के किन्नरी,के अपछर अवतार ॥ २ ॥ कुमरभणी पूछे
सहू,सुर कन्या कोण एह ॥ सहु वृत्तांत सुणी इश्युं,
हरख्या सहु नर तेह ॥ ३ ॥ प्रवहण चढीने चालि

या, धरता मन आणंद ॥ वलि दिवस केटले गए, जल खूटचुं नही बुंद ॥४॥ लोक सहु आकुल थया, बूट ण लाग्यां प्राण ॥ मरण मान सहुको थया, सहुनी थाशे हाण ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ पारधीयानी देशी ॥

॥ नांखे एम मदालसा रे. विनय करीने नेह रे ॥प्रीतमजी॥ मरशे सहु ए मानवी रे, पाणी पाखें एह रे ॥१॥ प्रीतमजी ॥ तुमें मारा आतमजी, तमने कहुं जेम तेमजी ॥ जल मलशे कहो केमजी के ॥ करवो करवो रे उपाय कोइ तेह रे ॥ २ ॥ प्रीत० ॥ ए आंकणी ॥ कुमर कहे जल केम मले रे, खारा समुद्रमझार रे ॥ प्री० ॥ द्वीपकूप कोइ नहीं रे, सुणी सुकुलिणी नार रे ॥ प्री० ॥ ३ ॥ मुज आजरण करंमियो रे, स्वामी उघाडो एह रे ॥ प्री० ॥ पांच रतन एमांहे ठे रे, गुण सांजल तुं तेह रे ॥ ४ ॥ प्री०॥ जूदेवाधिष्ठित ठे रे, पूजी मागे पास रे ॥ प्री० ॥ थाल कचोलां कनकनां रे, विविध जाजन दे खास रे ॥ ५॥ ॥ प्रीत० ॥ शयनासन आदिक जलां रे, मग गोधूम सुशालि रे ॥ प्री० ॥ जूषण मणिकंचन तणां रे, प्रगट हुवे ततकाल रे ॥६॥प्री०॥ नीररतन नल मूकीयें

रे, वंछित जलनी वृष्टि रे ॥प्री०॥ शालि दाल सहु खडी रे, तेज रतनें सुवृष्टि रे ॥ ७ ॥ प्री० ॥ वायुर तन गगने धर्यु रे, मृदुअनुकूल समीर रे ॥ प्री० ॥ गगन रतन पटकुल दे रे, देव दुष्यादिक चीर रे ॥ ८ ॥ प्रीत० ॥ करुणा करी प्रीतम तुमें रे, दुःखिया लोक निहाल रे॥प्री०॥ पांच रतन लेइ करी रे,नीर तृषा तुं टाल रे॥९॥प्री०॥ नदी न निज पाणी पीये रे,निजफल वृक्ष न खाय रे ॥प्री०॥ मेह न मागे सर नरे रे,परउ पगारें थाय रे ॥१०॥प्री०॥ जे अविलंबें वेलीयां रे, आपद दे आधार रे ॥ प्री० ॥ शरणें राखे मारतां रे, ते मोहोटा संसार रे ॥ ११ ॥ प्रीत० ॥ उपगारी तम सारिखा रे, जग सरज्या किरतार रे ॥ प्रीत० ॥ पर नां दुःख नाजन नणी रे, वली करवा उपगार रे ॥ ॥ १२ ॥ प्रीत० ॥ नारी वचन एहवां सुणी रे, हर्षित थयो कुमार रे ॥ प्रीत० ॥ धन्य ए नारी सुलक्षणी रे, धन्य एहनो अवतार रे ॥ १३ ॥ प्रीत० ॥ राक्षस कुलें ए उपनी रे, एहवी दीनदयाल रे ॥प्रीत०॥ कहे जिनहर्ष सोहामणी रे, ए थइ नवमी ढाल रे ॥ १४ ॥ प्रीत० ॥ सर्व गाथा ॥ १९० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नारी वयण सुणी करी, प्रमुदित थइ कुमार ॥ कूआथंनें बांधियुं, नीररतन तेणि वार ॥ १ ॥ मेघवृष्टि हुइ तुरत, सहू नर्यां जलपात्र ॥ लोक खुशी सहु को थयां, शीतल कीधां गात्र ॥ २ ॥ पांचे रतन प्रजावथी, विविध किया उपगार ॥ लोक सहु सेवा करे, गुण मोहोटो संसार ॥ ३ ॥ गुण पूजाए लोकमां, गुणने आदर थाय ॥ राजा परजा गुणथकी, सहुको लागे पाय ॥ ४ ॥ समुद्रदत्त दीठी नयण, नारी रतन एक दीस ॥ कामें व्यामोहित थयो, एऐ रूप जगदीश ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मनमांहे पापी रे शेठ एम चिंतवे रे, एहनी नारी रे होय ॥ तो हुं जाणुं रे नव सफलो थयो रे, मुज सरिखो नहीं कोय ॥ १ ॥ मनमां० ॥ एहवी नारी रे पुण्यें पामियें रे, के तूठे जगदीश ॥ पुण्यविण न मिले रे एहवी गोरडी रे, जाणुं विशवावीश ॥ ॥ २ ॥ म० ॥ दाय उपायें रे ए लेवी सही रे, ए विण रहुं न जाय ॥ एहवी नारी रे जो हुं नोगवुं रे,

तो वंछित सुख थाय ॥ ३ ॥ म० ॥ आवो आवो
जाइ रे जेला बेसीयें रे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ पा
णीवल्ल मनें रे तुज विण नवि गमे रे, जीवन प्राण
आधार ॥ ४ ॥ म० ॥ मननी वातो रे बेसो कीजि
यें रे, सुख दुःखनी एकांत ॥ गुणवंत पाखें रे केही
गोठडी रे, गुणवंत शुं नीरांत ॥ ५ ॥ म० ॥ तुं उ
पगारी रे जाजे पर दुःखडां रे, तुज समो नर नहीं
कोय ॥ तुज मुख दीठां रे तन मन उल्लसे रे, हीयडुं
हर्षित होय ॥ ६ ॥ म० ॥ मोहनगारा रे तें मुज म
न हर्युं रे, तुज विण रह्युं रे न जाय ॥ मोहनी लगाइ
रे तें कांइ प्रेमनी रे, तुज पाखे न सुहाय ॥ ७ ॥
॥ म० ॥ दिन तो कीजें रे तुज मन गोठडी रे, दिव
स संहेलो रे जाय ॥ रात्रें जाजे रे ताहरे स्थानकें रे,
शेठ कहे चित्त लाय ॥ ८ ॥ म० ॥ अरज करुं हुं रे
तुजने एटली रे, अरज सफल कर मित्त ॥ पर उप
गारी रे कर उपगारडो रे, चतुर खुशी कर चित्त ॥
॥ ए ॥ म० ॥ जे आपणनें रे वांछे वालहा रे,
तेहने न दीजें पूंठ ॥ तन मन दीजें रे तेहने आप
णुं रे, आदर दीजें उक्किठ ॥ १० ॥ म० ॥ वचन न
लोपे रे उत्तम कुल तणो रे, छेह दीयें केम तेह ॥

जेम तेम जोडे रें प्रात सोहामणी रे,निगुण न पाले तेह ॥ ११ ॥ म० ॥ घणुं घणुं तुजंने रे कहीयें किश्युं रे, तुं छे दीनदयाल ॥ कहे जिन हर्ष विचारो वालहा रे, ए थइ दशमी ढाल ॥१२॥म०॥ सर्वगाथा ॥२०७

॥ दोहा ॥

॥कुमरी कहे मदालसा,सांजल कंत सुजाण ॥ शेठ तणी ए प्रीतडी, हानि जाण निज प्राण ॥ १ ॥ कंत म रा चे एहशुं, ए में कपटी दीठ ॥ कालाशिरनो आदमी, होये डुष्ट मुहमिठ ॥ २ ॥ अति विश्वास न कीजियें, कंत कहूं कर जोडि ॥ एक कनक अरु कामिनी,एहथी अनरथ कोडि ॥ ३ ॥ यतः॥ पुष्पं दृष्ट्वा फलं दृष्ट्वा दृष्ट्वा, च नव यौवनं ॥ द्रविणं पतितं दृष्ट्वा, कस्य नो चलते मनः ॥१॥ कुमर कहे सांजल प्रिये,ए उपगारी शेठ ॥ आपण ऊपर एहनी, सुनजर शीतल दृष्ट ॥ ४ ॥ मुह मीठा जूठा हिये, हुं न पतीजुं ताय ॥ मीठा बोलो मोरियो, साप सपूछो खाय ॥ ५ ॥ धूता होय सलक्क णा, कुसती होय सलज्ज ॥ खारा पाणी सीयलां,ब हुफल होय अखज्ज ॥ ६ ॥ वयण नारीनां अवगणी, निशिवासर रहे पास ॥ अवसर देखी नाखियो, सा यरमांहे तास ॥ ७ ॥ कोलाहल करी उठियो, प

डियो समुद्रमझार ॥ मित्र सनेही माहरो, उत्तमच रित्र कुमार ॥८॥ जाण्युं तुरत मदालसा, ए पापीनां काम ॥ नाख्यो जलमां मुज पति, रोवण लागी ताम॥ए

॥ ढाल अग्यारमी ॥ नावननी देशी ॥

॥ परम सनेही वालम मांहरो रे, आतमनो आ धार ॥ मुज अबलाने मूकी एकलो रे, सायरमां निर धार ॥ १ ॥ प० ॥ हुं कंता कहेती इण नीचनो रे, म करीश तुं विश्वास ॥ माहरुं कह्युं न मान्युं नाह ला रे, तो फल पाम्यां तास ॥ २ ॥ प० ॥ तें जइ क जोले जाण्युं सहु रे, धवलुं तेटलुं दूध ॥ पण कप टीनुं कपट उलख्युं नहीं रे, हियडुं जास अशुद्ध ॥ ३ ॥ प० ॥ धूतारा तो मुह मीठा होये रे, पण हियडामां पाप ॥ जुंफ करतां ते बीहे नहीं रे, उप जावे संताप ॥ ४ ॥ प० ॥ मुख दीवाली होली हि यडले रे, एहवा डुर्जन होय ॥ पग पग नाखे पापी पासला रे, रखे पतीजो कोय ॥ ५ ॥ प० ॥ आशा छेदी माहरी पापीयें रे, कीधी निपट निराश ॥ जीवन विण हुं जीवुं केहि परें रे, नाखे प्रबल निःश्वास ॥६॥ ॥ प० ॥ जाणे पावसजलधर उल्लस्यो रे, नयणन खंफे धार ॥ पियु पियु चातक ज्युं प्रमदा करे रे, जा

ग्यो विरह अपार ॥ ७ ॥ प० ॥ क्षण रोवे क्षण जो
वे दश दिशों रे, क्षण क्षण आये चेत ॥ फूरे यूथ ट
ली मृगली परें रे, पियु तोड्युं कांइ हेत ॥ ७ ॥
प० ॥ प्राण होशे माहरां हवे प्राहुणां रे, तुज विण
सुगुणा नाह ॥ ए दुःख में खमणुं जाये नहीं रे,
विरह लगायो दाह ॥ ए ॥ प० ॥ में चिंतामणि रत
न लह्युं हतुं रे, राख्युं करी जतन ॥ पण छाजे नहीं
पुण्य विहूणडा रे, रांकां घरे रतन ॥ १० ॥ प० ॥
किश्युं करुं सांभल साहेलडी रे, हियडे दुःख न समा
य ॥ हीयडुं फाटे रलतलावशुं रे, केम जीवुं मोरी मा
य ॥ ११ ॥ प० ॥ प्राणसनेही जलनिधिमां पड्यो
रे, मने मलवानी आश ॥ झंपापात करुं जो नीरमां रे,
तो पोहोचुं पियु पास ॥ १२ ॥ प० ॥ हवे जीव्यानो
स्वाद नहीं किश्यो रे, वर छोडीजें जी प्राण ॥ ढाल थ
इ पूरी अग्यारमी रे, कहे जिनहर्ष सुजाण ॥ १३ ॥
॥ प० ॥ सर्वगाथा ॥ २२ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रीतमविण जीवुं नही, छंमिश पापी प्राण ॥
निशदिन वींधे मुज भणी, पंचबाण सपराण ॥ १ ॥
काया पावक संग्रहो, जीव ग्रहो जमराण ॥ रूप रसा

तल संग्रहो, गुण थाउ पाषाण ॥ २ ॥ मरवाने उ
द्यत थई, वृद्धा कहे तेणि वार ॥ म मर म मर
मूरख म मर, सांजल कहुं विचार ॥ ३ ॥ फांसी विष
नक्षण करे, पाणी अग्निप्रवेश ॥ गिरितरुवरथी प
डी मरे, कुमरण कहियें एस ॥ ४ ॥ एह मरणथी
नवो नवें, लहियें मरण अछेह ॥ पुण्यें मलशे जी
वतो, तुज प्रीतम सुसनेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ नणदल हे मोहन मुदरी ले ग
यो ॥ ए देशी ॥

॥ शेठ कहे आवी करी, रूडां वयण रसाल ॥ हे व
निता सुण वातडी, तुं म पड म पड डुःखजाल ॥ १ ॥ रम
णी हे मान वयण तुं माहरुं, मांहरुं वयण तुं पाल ॥ र०
॥ ए आंकणी ॥ मित्र अमूलक माहरो, उत्तमचरित्र कु
मार ॥ ते मुजने नवि वीसरे हो, साले हियडा मकार
॥ २ ॥ र० ॥ पुण्य हुवे तो पामियें, मन मान्या मित्त ॥
नयणवयण रलियामणा हो, पाले अविहड प्रीत ॥ ३
॥ र० ॥ खाणां पीणां खेलणां, न गमे मीठा नाद ॥ वात
विगत गुणगोठडी हो, लागे सहु निःस्वाद ॥ ४ ॥ र० ॥
डुःख म कर तुं गोरडी, डुःख कीधे शुं थाय ॥ मूउ ते
जीवे नही हो, जो वरसां सो थाय ॥ ५ ॥ र० ॥

चतुर नारी तुज सारिखी, अवर न दीठी कांय ॥ सु
ख भोगव संसारनाहो, मुजशुं प्रीत बनाय ॥ ६ ॥
॥ र० ॥ राणी धणीयाणी करुं, मारुं घर तुज हाथ
॥ जीवंतां विरतूं नही हो, मुज तुज अविचल साथ
॥ ७ ॥ र० ॥ तेतो परदेशी हतो, जाति वंश नहीं
शुद्ध ॥ शुं फूरे छे तेहने, तुंही कुलवंत मुद्ध ॥ ८ ॥
॥ र० ॥ पानफूल विचें राखशुं, दुहविश नहीं किण
वात ॥ चाकरनी परें चाकरी हो, करशुं तुज दिन
रात ॥९॥र०॥ ले लाहो जोबन तणो, सफलो कर
अवतार॥ तन धन जोबन प्राहुणो हो,जातां न ला
गे वार ॥ १० ॥ र० ॥ तुजशुं लागी प्रीतडी, तुज
विण रह्युं न जाय ॥ तुज मलवा मन उल्लसे हो,अव
र न कोइ सुहाय॥ ११ ॥ र०॥ ते माटे तुजने कहुं,
समज समज गुणवंत॥ हठ छोडी हितशुं मलो हो,
तुं कामिनी हुं कंत ॥ १२ ॥ र० ॥ तुजशुं मुजशुं प्री
तडी, सरजी सरजणहार ॥ भावि न मटे केहथी हो,
जो करे लाख प्रकार ॥ १३ ॥ र० ॥ तुं कोण हुं को
ण किहांथकी, आवी मलियो संच ॥ विधिनो ला
खियो हूतो हो, तुज मुज प्रेम प्रपंच ॥ १४॥ र० ॥
कोण करावे कोण करे, करतां करेशुं होय॥ ढाल थइ

ए बारमी, जिनहर्ष कहे तुं जोय॥ १५॥ र०॥ स०॥ २४५॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी ते शेठना, कुमरी कीध विचार ॥ ए पापी मुज नांजशे, शीलरयण शणगार ॥१॥ कूड कपट करी राखवुं, शील अमूलक एह ॥ चिंतवे एम मदालसा, वयण कहें सुसनेह ॥ २ ॥ सुणो शेठ साहिब तुमें, वयण कहुं सुप्रमाण ॥ मरण थयुं प्रीतम तणुं, दशदिन तेहनी काण ॥ ३ ॥ तुमने गमशे तेम होशे, चडी तुमारे हाथ ॥ परमेशर मेल्यो हवे, ताहरो माहारो साथ ॥ ४ ॥ उतावला सो बाउरा, धीरें सब कबु होय ॥ माली सिंचे सो घडा, रुतु आवे फल होय ॥५॥ किणहीक नगरें जाइयें, मास दिवसने छेह ॥ पुरपतिनी लेइ आगना, आवीश ताहरे गेह ॥ ६॥ नाम म लेइश माहरुं, हुं बुं ताहरी नार॥ शेठ नणी कीधो खुशी, कुमरी बुद्धिविचार॥ ७॥

॥ ढाल तेरमी ॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ए देशी॥

॥ वृद्धा कहे कुमरी नणी रे, करियें शील जतन्न॥ त्रिभुवनमांहे दोहेलुं रे, लहेतां एह रतन्न रे ॥१॥ बहेनी, सांजल माहारी वात ॥ शीलें अरि करी केशरी रे, न करे कोइ घात रे ॥ ब० ॥ ए आंकणी ॥ वायु

रतन सुप्रसादथी रे,तट लहियें कुशलेह ॥ तिहां जो मुज प्रीतम मले रे,तो रहीयें निज गेह रे ॥२॥ब०॥ न मलें तो आपण बेहुरे,लेशुं संजम नार ॥ वयण सुणी कुमरी इस्यां जी,हरखी चित्त मकार रे ॥ ३ ॥ ॥ ब० ॥ मानी वात मदालसा रे, कीधुं अंगीकार ॥ कुमर तणो हवे सांजलो रे,जेह थयो अधिकार रे ॥ ॥ ४ ॥ ब० ॥ जलनिधिमांहे कुमर पड्यो रे, मकर ग्रह्यो ततकाल ॥ सायर तट ते आवियो रे, धीवर नाख्यो जाल रे ॥ ५ ॥ ब० ॥ महामकर घरे आणि यो रे, कीधो तास विनाश ॥ मत्स्यउदरथी नीसर्यो रे, जीवित मानोलाश रे ॥ ६ ॥ ब० ॥ देखी धीवर चिंतवे रे, मोहोटो नर छे एह ॥ सेवा खिजमत सहु करे रे, कुमर रहे तस गेह रे ॥ ७ ॥ ब० ॥ हवे स मुद्रदत्त शेठना रे, वाहण चाल्यां जाय ॥ वायुरतन पूजा करी रे, आव्या बे दिनमांय रे ॥ ८ ॥ ब० ॥ तिहां अजाण्यां आवियां रे, मोटपल्ली वेलाकुल ॥ राजा नरवर्मा तिहां रे, जिनधर्मशुं अनुकूल रे ॥ ९ ॥ ॥ ब० ॥ समुद्रदत्त लेइ नेटणुं रे, लेइ कुमरी साथ ॥ रायसनायें आवियो रे, नेटयो अवनीनाथ रे ॥१०॥ ॥ ब० ॥ आदर नृपें बहु आपियुं रे, पूछ्यो कुशल

लाप ॥ ए कोण नारी शेठजी रे,सुरकन्या गुण व्याप रे ॥ ११ ॥ ब० ॥ शेठ कहे स्वामी सुणो रे, चंद्रद्वीपें लही एह ॥ नारी एहनी स्वामिनी रे, सुंदर सुगुण सनेह रे ॥ १२ ॥ ब० ॥ तुम आदेशें माहरी रे,थाये एह कलत्र ॥ बोली तास मदालसा रे, नाखे किश्युं अखत्र रे ॥ १३ ॥ ब० ॥ राजा आगल पापीयो रे, नांखे एह अलीक ॥ राजा जो न्यायी हुवे रे, तो तुज लावे नीक रे ॥ १४ ॥ ब० ॥ निर्लज शुं लाजे नही रे, जपतो आलपंपाल ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थई रे,तेरमी ढाल रसाल रे ॥१५॥ब०॥सर्वगाथा॥२७१॥

॥ दोहा ॥

॥ लाज करी कुमरी कहे, वयण राय अवधार ॥ मुज पतिने एणे पापीयें, नाख्यो समुद्रमझार ॥ १ ॥ राय सुणी कोपें चड्यो, घाल्यो कारागार ॥ माल पांच सय पोतनो, मूक्यो निजभंडार ॥ २ ॥ सांभल पुत्री नृप कहे, रहे तुं मुज आवास ॥ पुत्री मुज तिलोत्तमा, रहे तुं तेहनी पास ॥ ३ ॥ बेहेन तेह छे ताहरे, सखी तणे परिवार ॥ सुखें समाधें रहे सदा, चिंता दूर निवार ॥ ४ ॥ दीन जणी तुं दान दे, छोडि

सयल दुःखदाह ॥ किणही तट लागो होशे, तो निर त करशे तुज नाह ॥ ५ ॥

॥ ढाल चन्दमी ॥ हो मतृवाले साजनां ॥ ए देशी ॥

॥ सुखें रहे कुमरी तिहां, मननी बीक सहु नागी रे ॥ राय मानी पुत्री करी, पुण्यदशा तस जागी रे ॥ ॥ १ ॥ सु० ॥ पंच रतन सुपसायथी, तिहां दान नि रंतर आपे रे ॥ श्रीजिनधर्म करे सदा, सहुने जिनधर्म थापे रे ॥ २ ॥ सु० ॥ सतीजनोचित कन्यका, ले नि यम मले नहिं सांइ रे॥त्यां सुधी नूयें सुयवुं, स्नानादिक न करवुं कांइ रे ॥ ३ ॥सु०॥ नारे वस्त्र न पहेरवां, प हेरुं नहीं फूलसुगंधो रे ॥ अंगविलेपण नवि करुं, तं बोल तजुं प्रतिबंधो रे ॥ ४ ॥सु०॥ स्वादिम में तजवुं सही, नीलां फल नक्कण नवि करवां रे ॥ नियम ली यो सहु शाकनो, दूध दहीं मही परिहरवां रे ॥ ५ ॥ ॥ सु० ॥ सूस सहूं सुखडी तणुं, साकर गुड खांम न खावे रे ॥ पायस सरस न जीमवुं, जिमवा काजें न वि जावे रे॥६॥सु०॥ एक भुक्त नित्य जमीवुं, कारण वि ण किहांये न जावुं रे ॥ गोखें पण नवि बेसवुं, लोक स्थिति चित्त न लावुं रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ सरस कथा करवी नहीं, गाथा काव्य श्लोक सरागी रे ॥ कानें

पण सुणवां नहीं, करवी तो कथा वैरागी रे ॥ ८ ॥
॥ सु० ॥ वात न करवी पुरुषशुं, चित्राम पुरुष न
विलोकुं रे ॥ नाटक ख्याल जोउं नहीं, जातुं चंचल
चित्त रोकुं रे ॥ ए ॥ सु० ॥ एहवी ए लीधी आखडी,
पियु न मले तिहां लगें पांलुं रे ॥ ध्यान करुं नव
कारनुं, पूजा करी पाप पखालुं रे ॥ १० ॥ सु० ॥
अन्य दिवस धीवर सहू, साथें करि उत्तम कुमारो
रे ॥ कांहिक काम वशें मली, आव्या मोटपल्ली पा
रो रे ॥ ११ ॥ सु० ॥ नरवर्मराय मंमावियो, पुत्री
कारण आवासो रे ॥ अति मनोहर सात नूमियो,
दीठां होय उल्लासो रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ पुरली शोजा
जोवतो, तिहां आव्यो कुमर सुजाण रे ॥ कामका
रीगर तिहां करे, निजशास्त्र सहूना जाण रे ॥ १३ ॥
॥ सु० ॥ गाम गाम ते वीसरे, खोटां घर किहां च
णावे रे ॥ ढाल थइ ए चादमी, जिनहर्ष कुमार
शीखावे रे ॥ १४ ॥ सु० ॥ सर्वगाथा ॥ २ए० ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर वास्तुविद्या विडुष, पण न मले अहंकार॥
सूत्रधारने शीखवे, सघलोही अधिकार ॥ १ ॥ चम
त्कार चित्त पामिया, चिंते सहु सूत्रधार ॥ ए नर दीसे

हे सही, विश्वकर्मा अवतार ॥ २ ॥ नक्ति करे सहु कुमरनी, पासें राख्यो तास ॥ पुर खोल्यो सहु धीव रें, न लह्यो थया उदास ॥ ३ ॥ इहां आवी खोयुं रतन, अमनें पड्यो धिक्कार ॥ एम निज आतम निंदता, सहु गया तेणि वार ॥ ४ ॥ रायकुमरनी सान्निध्यें, पूरो थयो आवास ॥ सप्तनूमि सुरगृह जीश्यो, माहा ज्योति सुप्रकाश ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥
॥ ए देशी ॥

॥ पूरु थयुं मंदिर कुमरीनु, जोवा आव्यो राय जी ॥ देखीने रलियायत हुउ, कीधो बहुत पसाय जी ॥१॥ उत्तम चरित्र कुमार निहाल्यो, रूपकला गुणजोइ जी ॥ राजा नरवर्म चित्त विचारे, हे राजनपुत्र कोइ जी ॥ २ ॥ पू० ॥ एहवुं नृप चिंतवीने वलियो, कुमरी रमवा काज जी ॥ वनवाडीमांहे संचरियां, सइयर तणे समाजजी ॥ ३॥ पू० ॥ मशीयो नुयंग क्रीडा करंतां, ततक्षण थइ अचेत जी ॥ उपाडीने मंदिर आणी, नयण धवल थयां श्वेत जी ॥ ४ ॥ पू० ॥ अंगो अंग महाविष व्याप्युं, गारुडविद्या जाण जी ॥ ते सहु तेडाव्या राजवीएं, उडी कुमरी प्राणजी ॥ ५॥ पू०॥ म

णि मूली मल्हुरा बहु आण्या,कीधा कोडि उपाय जी ॥ पण समाधि थायनहीं किमही, किमहीविष नवि जाय जी॥ ६ ॥पू०॥ नगरमांहे पडहो फेराव्यो, जे कोइ वि द्यावंत जी ॥ रायतणी कन्या जीवाडे, ते पसाय लहंत जी ॥ ७ ॥पू० ॥ अर्ध रांज कुमरी नृप आपे,कुमर सुण्यो विरतंत जी ॥ पंडह छब्यो ततक्षण आवीने, उपगारी गुणवंत जी ॥ ८ ॥ पू० ॥ उत्तम रायसमीपें आव्यो, तेहिज नर ए होय जी ॥ आदर देईपासें बेसा स्यो,स्वारथ मीठो होय जी ॥ ए॥ पू० ॥ एक स्वार्थ ने वली गुण मांहे, आदर लहे अपार जी ॥ कन्या आणी तिहां उपाडी, कुमर करे उपगार जी ॥ १० ॥ ॥ पू० ॥ मंत्र गणी पाणीशुं छांटी, कुमरी थइ सचेत जी ॥ कर जोडी राजा गुण गावे,धन्य धन्य तुं कुलकेत जी ॥११ ॥ पू०॥ तें उपगार कियो मुज मोहोटो, दीधुं जीवितदान जी ॥ मुज कन्याने तें जीवाडी, विद्या तणा निधान जी ॥ १२॥ पू० ॥ तुजने शो उपगार करुं हुं, करुणावंत कृपाल जी ॥ ए जिनहर्ष कन्या तुज दीधी, परणो पन्नरमी ढाल जी ॥१३॥पू०॥ ३०८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय विचारे चित्तमां,ए नर छे कुलवंत ॥ राज्य क

न्या देइ तेहने, हुं हवे रहुं निश्चिंत ॥ १ ॥ जोषी तुरत तेडावियो, जांखे एणि परें राय ॥ परणे कुमरी त्रिलोचना, वासर लगन बताय ॥ २ ॥ जोई पुस्तक टीपणुं, लगन कियो निरधार ॥ एह दिवस निर्दोष छे, जोतां दिवस हजार ॥ ३ ॥ घणे महोत्सवशुं नृपति, वर कन्या परणावि ॥ दीधो राज्यजंमार सहू,करमोचन प्रस्ताव॥४॥कुमरी काज करावियो,सतजूमियो आवास ॥ राय दियो रहेवा जणी,तिहां जोगवे विलास ॥५॥

॥ ढाल शोलमी ॥ पंथीडानी देशी ॥

॥ दासीने कहे हवे मदालसा रे, प्रीतमनी कांइ न थइ सार रे ॥ सायर मांहे बूडयो ते सही रे, हवे हुं जीवुं शे आधार रे ॥ १ ॥दा०॥ दान दीयो में दीन दुःखी जणी रे, साते क्षेत्रें वावरयुं वित्त रे॥ श्रावक धर्म यथाशक्तें करे रे, जिनवरपूजा चोखे चित्त रे ॥ ॥ २ ॥ दा०॥ हवे मुज बहेनी कुमरी त्रिलोचना रे, तेहने देइ पंच रतन्न रे॥दीक्षा लेइश हुं जिनवरतणी रे, पालिश संयम करिय जतन्न रे ॥ ३॥ दा० ॥ दासी कहे सांजल तुं स्वामिनी रे, म कर म कर मनमांहे विषाद रे॥ कोइ परदेशी वर्यो त्रिलोचना रे, जेहनो सहू बोले यशवाद रे ॥ ४ ॥ दा० ॥ रूपकला गुण

जेहमांहे घणारें, सांजलीयें डीए जेहनी ख्यात रे ॥ खबर करुं जो दे तुं आगंन्या रे, कुमरी कहे तो जो मोरी मात रे ॥ ५ ॥ दा० ॥ आवी कुमरी घर उतावली रे, दीठो उत्तमचरित्र कुमार रे ॥ गुप्ताकृति देखी नवि उलख्यो रे, दीठो सुंदररूप आकार रे ॥ ६ ॥ दा० ॥ कूण एक वात करी दासी वली रे, आवी निजकुमरी नी पास रे ॥ सांजल माहारी वात मदालसा रे, दीठो पुरुष जइ आवास रे ॥ ७ ॥ दा० ॥ रूपें तो तुज जरतार सारिखो रे, पण कांइक आकृतिमां फेर रे ॥ सांजली जाग्यो प्रेम मदालसा रे, वली मन लीधो पाछो घेर रें ॥ ८ ॥ दा० ॥ फट रे पापी मन शुं कियुं रे, किण उपर तें आण्यो राग रे, प्राणसनेही इहां आवी रहे रे, एहवुं किहांथी ताहरुं जाग्य रे ॥ ९ ॥ दा० ॥ मिछा डुक्कड दीधो मदालसा रे, हवे कुमरें पूछी निज नारि रे॥ ए कोण वृद्धा इहां आवी हुती रे, कुमरी कहे सांजल जरतार रे ॥ १० ॥ दा० ॥ वयण बोलावी बहेन मदालसा रे, परदेशिणी तेहनी छे दासी रे ॥ कुमर चिंते ते तो माहारी प्रिया रे, जाग्यो राग थयो उल्लासीरे ॥ ११ ॥ दा०॥ रोमांचित काया मन उ

लस्युं रे, नाम सुणी हरख्यो ततकाल रे ॥ पुण्य हुवे तो ते मुजने मले रे,ए जिनहर्ष शोलमी ढाल रे॥१ ३॥

॥ दोहा ॥

॥ वली मनमांहे चिंतवे,में फोगट धस्यो राग ॥ किहां ते नारी मदालसा, रूपकला सोभाग ॥ १ ॥ समुद्रदत्त लेइ गयो,पापी मुजने नाखि ॥ जिहां होये तिहां जइ मलुं, पण दैव न दीधी पांख ॥ २ ॥ ए सुख लीलासाहेबी, ए नारी ए राज ॥ पण नही नारी मदालसा,तो ए सुख किण काज ॥ ३ ॥ हइडामांह मदालसा, मुख न जणावे वात ॥ माणे नारी त्रिलोचना, सुख विलसे दिन रात ॥ ४॥ सुख दुःख न कहे केहने, जे नर उत्तम होय ॥ संगतें नरम गमायवो, वाट न लेवे कोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी॥ श्रेणिकमन अचरिज थयुं ॥ए देशी॥

॥ एण अवसर तिहां सांभलो, आगल जे उपगारो रे ॥ मध्यान्हें जिन पूजवा, जिनगृह गयो कुमारो रे ॥ १ ॥ एण० ॥ करे विचार त्रिलोचना, वार घणी थइ आजो रे ॥ प्रीतम हजीय न आवियो, किशें विलंब्या काजो रे ॥२॥एण०॥ दासी मूकी देहरे, प्रीतम नरति लहाय रे ॥ सघले हो जोयुं फरी, पण लाधो

नहिं किहांय रे॥२॥एण०॥ करे विलाप त्रिलोचना,पिउ पाखें न सुहावे रे॥ ऊंडे जल जेम माछली, तडफि तड फि दुःख पावे रे ॥४॥एण०॥ राजा पण चिंता करे, सुद्धि किहां नवि थाये रे॥ दुःख सहु कोइ करी रह्या, चिंतामां दिन जाये रे ॥५॥एण०॥ तेण पुरमांहे धनी रहे, महेश्वरदत्त मनाय रे॥ छप्पन कोडि कनकनी, निधि व्याजें व्यवसाय रे॥ ६ ॥ एण० ॥ वाहण ज लवट पांचशें, शकट पांचशें वहेतां रे॥ गृह विपण प ण पांचशें, पांचशें वखार समहिता रे॥७॥एण०॥ गोकु ल जेहने पांचशें,पांचशें गज मदमाता रे ॥ घोडा जा स विलायती,पांचशें चंचल ताता रे॥८॥एण०॥ पांचशें सुंदर पालखी, पांच लाख भृत्य जेहने रे॥ सुभट पांचशें ऊलगे,पुत्री नही पण तेहने रे ॥ ए ॥ एण०॥ केटलेएक दिने दीकरी, एक थइ गुणवंती रे ॥ चो शठ नारिकला भणी, सुंदररूप सोहंती रे ॥ १० ॥ ॥ एण० ॥ सहस्रकला नामें भली, मनमां शेठ विचा रे रे ॥ ए संसार असारता, पापें करी जीव भारे रे ॥ ११ ॥ एण० ॥ कन्या सारिखो वर मले, तो तेह ने परणावुं रे ॥ घरनो भार देई करी, संपद तास भ लावुं रे ॥ १२॥ एण० ॥ हुं दीक्षा लेउं जैननी, आ

तमने हितकारी रे ॥ आतम तारुं आपणो, मनमां वात विचारी रे ॥ १३ ॥ एण०॥ वरनी करे गवेषणा, पण न मले मन गमतो रे ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थइ, सत्तरमी ढालें नमतो रे ॥ १४ ॥ एण० ॥ सर्वगाथा ॥ ३४४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछ्यु शेठ निमित्तियो; कोण कन्या वरदाख ॥ ज्ञान प्रयुंजी ते कहे, साची माने नाख ॥ १ ॥ महाराजा वर एहने, मलशे एकण मास ॥ सामग्री विवाहनी, करो सगाई खास ॥ २ ॥ महेश्वरदत्त खुशी थयो, करे महोत्सव नूरि ॥ लगन लीयो एक मासनो, वाजे मंगलतूर ॥ ३ ॥ स्वजन तेडावे दूरथी, मंगल अनुपम कीध ॥ मोहोटां तोरण बांधियां, नगरमांहे यश लीध ॥ ४ ॥ धवल मल्हावे गोरडी, वरने देवा काज ॥ गज तुरंग वस्त्राजरण, करि राखे सहु साज ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ राजा जो मिले ॥ ए देशी ॥

॥ पुरमांहे थइ सघले वात, महेश्वरदत्त विवाह विख्यात ॥ पुण्यें पामियें ॥ एतो मन मान्या सुखशात ॥ पु० ॥ सांजली राय सजायें राय, मनमांहे विस्मय वली थाय ॥ १ ॥ पु० ॥ पहेले मांड्यो छे विवाह, वरनी वात्त न दीसे कांहि ॥ पु० ॥ कोण मा

हाराजा इहां आवशे, पुत्री जेहने परणावशे ॥ २ ॥
॥ पु०॥ राय विचारें एहवुं चित्त, धन्य धन्य एह महे
श्वरदत्त ॥ पु० ॥ एहवी लक्ष्मीनो जे धणी, वैराग्यें ते
हने अवगणी ॥ ३ ॥ पु० ॥ देइ जमाइने घर सार,
पोतें लेशें संजम नार ॥ पु० ॥ हुं पण त्रिलोचना
भरतार, शुद्ध करी द्युं राजनंभार ॥ ४ ॥ पु० ॥ दीक्षा
लेइ आतमकाज, सारुं जेम पामुं शिवराज ॥ पु० ॥
महेश्वरदत्तशुं कियो विचार, आपण थाशुं दीक्षा
धार ॥ ५ ॥ पु० ॥ पडहो नगर फेराव्यो राय, परदे
शीसें देशी थाय ॥पु०॥ त्रिलोचनावर निरति कहे, म
दालसा विरतंत जे लहे ॥६॥पु०॥ तेहने राजा आपे
राज, सहस्रकला कन्या शिरताज ॥पु०॥ पडहो नगर
निरंतर फरे, एहवां वचन मुखें उच्चरे ॥ ७ ॥ पु० ॥
मास एक हुउ जेटले, पडह छब्यो पोपट तेटलें ॥
॥ पु० ॥ सूडो कहे वचन तेणि वार, जो जो राज
पुरुष अवधार ॥ ८ ॥ पु० ॥ लेजाउ मुज राज दुवा
र, राय जमाइ कहुं विचार ॥ पु० ॥ मदालसा पति
नी कहुं शुद्धि, पूर्वं वृत्तांत कहुं मुज बुद्धि ॥ ए ॥ पु०॥
तुमने वात कहुं हुं आज, कन्या सहस्रकला लहुं रा
ज ॥ पु० ॥ पंखानुं पण जाग्युं जाग्य, नहीतो मुज

ए किहांथी लाग ॥ १० ॥ पु० ॥ तेण पुरुषें कौतुक ने काज, राय कन्हें आण्यो शुकराज ॥ पु० ॥ रायस ना पूराणी घणुं, लोक सहु आव्युं पुरतणुं ॥ ११ ॥ ॥ पु० ॥ मदालसा आणी इहां राय, त्रिलोचना प रियचमां गाय ॥ पु० ॥ हुं ज्ञानी सघले विख्यात, तीन कालनी जाणुं वात ॥ १२ ॥ पु० ॥ राजा तिम हिज कीधुं सहु, नगर लोक मलियां तिहां बहु ॥ ॥ पु० ॥ बेठो सिंहासन नूपाल, कहे जिनहर्ष अढार मी ढाल ॥ १३ ॥ पु० ॥ सर्व गाथा ॥ ३६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नूत नविष्यत कालनी,केम कहेशे ए वात ॥ ज्ञा न किहांथी एहमां, पशु तणी ए जात ॥ १ ॥ राजा कहोने आपशे,पंखीने केम राज,राज्यपशु केम पाल शे, अचरिज थाशे आज ॥ २ ॥ कोइक ठे ए देवता, कीधुं ठे ए रूप॥ नहीं तो पोपट पंखियो, जाणे किशुं स्वरूप ॥३॥ पहेली नारी मदालसा,तेहनोकहुं प्रबंध ॥ सावधान थइ सांजलो,सकल कहुंसंबंध ॥४॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥ वात म का ढो हो व्रत तणी ॥ ए देशी ॥

॥ वारु नगर वाणारसी, मकरध्वज नूपालो रे ॥

तास कुमर रलियामणो, उत्तम चरित्र दयालो रे ॥१॥
॥ वा० ॥ रीसावीनें नीकल्यो, नमतो नरुअछ आयो
रे ॥ प्रवहण बेसी चालियो, धरतो हर्ष सवायो
रे ॥ २ ॥ वा० ॥ गिरिजलंकांत समुद्र विचें, तिहां
कूपकजल नरियो रे ॥ जलकारण मांहे गयो, वारी
मां उतरियो रे ॥ ३ ॥ वा० ॥ देवनुवन देखी क
री, पेखे मांही कुमारो रे ॥ लंकापति राक्षसतणी, पुत्री
रति अवतारो रे ॥ ४ ॥ वा० ॥ निरुपम नाम मदा
लसा, परणी बाहेर आयो रे ॥ समुद्रदत्त वाहण
चढयो, जलविण सहु दुःख पायो रे ॥ ५ ॥ वा० ॥
पंच रत्न सुप्रसादथी, जल नोजन सुख आप्यां रे ॥
पर उपगारी एहवो, सहुनां संकट काप्यां रे ॥ ६ ॥
॥ वा० ॥ स्त्री धन देखी चित्त चल्युं, कुलमर्यादा
ठांमी रे ॥ समुद्रदत्त व्यवहारियें, नाख्यो जलधि उ
पाडी रे ॥ ७ ॥ वा० ॥ तिमिंगल तट जइ रह्यो, मै
निक तास विदार्यो रे ॥ निकलीयो ते जीवतो, मा
छी चित्त विचार्यो रे ॥ ८ ॥ वा० ॥ ए कोइ उत्तम
नर अछे, राख्यो तेहने पासें रे ॥ एक दिन पुर जोवा
नणी, आव्या मली उल्लासें रे ॥९॥ वा०॥ पुत्री राय त्रि
लोचना, साप डशी जीवाडी रे ॥ परणी तिहां सुख नो

गवे, प्रीति परस्पर जाडी रे ॥ १० ॥ वा० ॥ एक दिवस जिन पूजवा, कुमर गयो मध्यान्हें रे ॥ जिन पूजा विधिशुं करी,एक चित्तें एक ध्यानें रे ॥ ११ ॥ ॥ वा० ॥ पुष्पमध्य दीठी तिहां, मदनमुद्रित मुख नलिका रे ॥ उघाडी तंबोलीएं, सर्प मशी अंगुलिका रे ॥ १२ ॥ वा० ॥ थइ अचेत पड्यो तिहां, उत्तम कुमर ततकालो रे ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थइ, उंग णीशमी ए ढालो रे ॥१३॥वा०॥ सर्वगाथा ॥३७९॥

॥ दोहा ॥

॥ तुजने नारी मदालसा,तणी कथा कही एह ॥ तुज कुमरी नरतारनी,सुधि कही में तेह ॥१॥ सत्य प्रतिज्ञा ताहरी, दे मुजने हवे राज ॥ सहस्रकला कन्या सहित, माहरे एहशुं काज ॥ २ ॥ हुं तिर्यंचसुख जोगवुं, राज्य तणुं निशदीस ॥ सहस्रकला परणावजो, तुजने द्युं आशीष ॥ ३ ॥ राय कहे पंखी जणी, केम देवराए राज॥ कीर कहे उत्तम जणी, वचन तणी छे लाज ॥४ ॥ दइश तो लेइशखरो, नहींतो जइश मुज गाण ॥ वृत्ति करीश फल फूलनी, थाउ तुज कल्याण ॥ ५ ॥ मायावी माणस हूये, कीर कहे सुण राय ॥ काम करी पोतातणुं, मुकर जाये क्षण मांय ॥ ६ ॥

न घटे मुज रहेवुं इहां,तुं तो काढे इंद ॥ काम सर्यां दुःख वीसर्यां, वैरी हूआ वैद ॥ ७ ॥ एम कही सूडो उडियो,नृप राख्यो कर साहि॥ धीरो था तुज आपी शुं, अर्थि म धर मनमांहि ॥ ८ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ तुंतो मारावालम रे गुज रातीरा ॥ ए देशी ॥

॥ तुंतो माहारा वाहला रे पंखी सूवटा,तुने विन ति करुं कर जोडी रे ॥ जीवे छे कुमर के नहीं, कांहि गांठ हैयानी छोडी रे ॥१ ॥ तुं० ॥ वलतुं शुक जांखे रे राजवी, मुजमांहे नहीं कांइ कूड रे ॥ तुज आगल प्रथम कथा कही, तो न्याय पडी मुख धूड रे ॥ २ ॥ तुं० ॥ एटली जो कथा कह्यांथकां, मुजने तें नाप्युं राज रे ॥ तो आगल कहे शुं थाशे सही, शुं थाशे माहारां काज रे ॥ ३ ॥ तुं० ॥ कुमरी कहे ताम मदालसा, तुज पाये पडुं छुं कीर रे ॥ मुज उ पर महेर धरी करी,कर नीवेडो खीर नीर रे ॥४॥तुं०॥ राजन कुमरी तुमें सांजलो, कहुं सापें मश्यो कुमार रे ॥ धरणी पडियो नहीं चेतना, विष व्याप्युं अंग अपार रे ॥ ५ ॥ तुं० ॥ नामें अनंगसेना गणिका ज णी, जाणे अनंगसेना साक्षात रे ॥ सहु नरनां रे मा

न मोड्यां जिणें, तेह्नी शी कहियें वात रे ॥ ६ ॥
तुं० ॥ रूपें तोरें जींती अपछरा, रति जींती नारी अं
ग रे ॥ नागकुमरी रे जींती पातालनी, कोइ मांभी न
शके जंग रे ॥ ७ ॥ तुं० ॥ ते गणिका आवी किण
कारणें, तेणें दीठो पड्यो कुमार रे ॥ उपाडीने नि
जघर ले गइ, एतो फशियो छे विषधार रे ॥८॥ तुं०॥
विष अपहारी मणि आणीने, जलमांहे पखाली तेह
रे ॥ ते जलशुं रे सींचे कुमरने, निर्विष थयो ततक्षण
देह रे ॥ए ॥ तुं० ॥ हुंतो तूठ्यो रे गणिका तुज न
णी, माग माग रूचे तुज जेह रे ॥ माग्यो द्यो जो
मुज साहिबा, सुख विलासो धरीय सनेह रे ॥ १० ॥
॥ तुं० ॥ तेणे वेश्या रे मंदिर राखियो, चोथी भूइ जि
हां चित्रशाल रे ॥ ते साथें रे सुख संभोगना, भोगवे
दिन रात रसाल रे ॥ ११ ॥ तुं० ॥ तेणे गणिका रे
तेहने गुण कीधो, गुण मान्यो दीधो मान रे ॥ तुजने
संभलावी सहु कथा, मुज नापे तुं राजदान रे ॥१२॥
तु० ॥ तुजथी तो रे तेह कुमर भलो, वेश्याशुं मांड्यो
घरवास रे ॥ निजवच निष्फल कीधुं नहीं, धन्य धन्य
तेहने साबाश रे ॥१३॥ तुं० ॥ निज वाचा रे जे पाले न
हीं, ते माणस नही पण ढोर रे ॥ जिनहर्ष थइ ढा

ल वीशमी, शुक बोल्यो एणिपोरें जर रे ॥१४॥ तुं०॥ सर्वगाथा ॥ ४०१०॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्ति हूउ महाराज तुज, में पाम्युं सहु राज॥ निरपराध मुज जाण दे, नहीं राज्यशुं काज ॥ १ ॥ लाज थयो इहां एटलो, गलशोषण जे काय ॥ पोंक न खाधो कर बल्या, घरना चूक्या घाय ॥ २ ॥ वैद्य जणी कल्याण हुउ, दाक्षिण्य मूकी जेय ॥ पाहलां ध न लेइ पछें, गोली औषध देय ॥ ३ ॥ दाक्षिण्य मेल्ही नवि शक्यो, हुं मूरख शिरताज ॥ सर्व कथा कहीने प छें, मागण लाग्यो राज ॥ ४ ॥ सांजल शुक राजा कहे, पूरण रोग न जाय ॥ वैद्य कह्युं धन नवि ल हे, तुं केम राज लहाय ॥ ५ ॥ तें अरधी कही वार ता, पूरो न कह्यो जेद ॥ मूढ उतावल कां करें, था शे सफल उमेद ॥ ६ ॥ अनंगसेना गृह जाइने, कुमर निहाली आज ॥ कथा सुणी सहु आगली, तुजने देइश राज ॥ ७ ॥ चलु जेवारें आवियुं, जमणनी जांगी आश ॥ तेम तुज वचन प्रतीत छे, वेसो हृण आवास ॥ ८ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ वैरागी थयो ॥ ए देशी ॥

॥ राये चाकर मोकल्या रे, जोवा गणिकारे गेह ॥
जइ जोजो घर तेहनुं रे, कुमर न दीठो तेहो रे ॥
॥ १ ॥ ए शुं शुक कह्युं, वेश्या घर केम जायो रे,
उत्तम नरथकी, एतो कांम न थायो रे ॥ २ ॥ ए० ॥
ताहरा घरमां सांजल्यो रे, उत्तम चरित्र कुमार ॥ तें
राख्यो छे कहे किहां रे, साचुं बोल गमार रे ॥ ३ ॥
॥ ए० ॥ शुं जाणुं रे जाइयो रे, कुमर तणी हुं सार ॥
राय जमाइ माहरे रे, शे आवे आगारो रे ॥ ४ ॥ ए० ॥
घर खोली जोवो तुमें रे, शो भ्रम राखो रे आम ॥
हाथ तणा कांकण जणी रे, आरीसो शुं काम रे ॥
॥ ५ ॥ ए० ॥ जोइ पाछा आविया रे, नृपने कह्युं वृ
त्तांत ॥ कुमर नहीं गणिका घरें रे, राजा थयो सचिं
त रे ॥ ६ ॥ ए० ॥ गहन वीत नवि जाणियें रे, छे को
इ देव चरित्र ॥ राय कहे शुकरायने रे, किशुं पजा
वे मित्तरे ॥ ७ ॥ ए० ॥ तुज विण निरत न का पडे रे,
कहे किहां मुज जामात ॥ किस्युं गुमानी थइ रह्यो
रे, कहेने साची वातो रे ॥ ८ ॥ ए० ॥ सूडो कहे
राजन सुणो रे, धूरत जाण्यो रे तुज्ज ॥ बालक जेम
जोलावियो रे, तेम जोलाव्यो मुज्ज रे ॥ ए ॥ ए० ॥

उत्तम ते उत्तम हुवे रे, मध्यम कदिय न हूंत ॥ अग
र दहे तन आपणुं रे, परिमल जग पसरंत रे ॥१०॥
॥ ए० ॥ तुं उंरसिया सारिखो रे, हुंतो सुखड सार ॥
घासंतां घासे नहीं रे, धिक् तेहनो अवतारो रे ॥
॥ ११ ॥ ए० ॥ तुजथी फल पाम्युं नही रे, फोकट
कियो रे प्रयास ॥ सांजल हवे तुं सहु कहुं रे, सहुने
थाये उल्लास रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ अनंगसेना मन चिं
तव्युं रे, अनुपम रूप सौजाग्य ॥ राय जमाइ पण
सही रे, मलियो माहरे जाग्य रे ॥१३ ॥ ए० ॥ ज
नम लगें ए माहरे रे,थाये जो जरतार॥ मानव जव
सुकृतारथो रे, जोगवुं जोग अपारो रे ॥ १४ ॥ ए०॥
मुज घरथी जाये नही रे, करियें तेह उपाय ॥ दोरो
मंत्री सूत्रनो रे, बांध्यो तेहने पाय रे ॥ १५ ॥ ए०॥
तेहनो कीधो सूवटो रे,नारी चरित्र विशाल ॥ एम जि
नहर्ष राख्यो घरें रे, एकवीशमी ए ढालो रे ॥ १६ ॥
॥ ए० ॥ सर्वगाथा ॥ ४२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पोपट घाल्यो पांजरे, रात्रें दोरो गोड ॥ पुरुष
करी सुख जोगवे, सफल करे मन कोड ॥ १ ॥ दि
वसें वली पोपट करे, निशि दिन एम करंत ॥ सूडो

मनमां चिंतवे, ए शुं थयुं वृत्तंत ॥ २ ॥ मनुष्य थकी तिर्यंच थयो, में श्यां कीधां पाप ॥ आ जव तो नवि सांजरे, शे पाम्या संताप ॥ ३ ॥ हा हा जाण्युं में हवे, पिता अदीधी नार ॥ परणी कुमरी मदाल सा, पांच रतन ग्रह्यां सार ॥ ४ ॥ ए बे पाप कियां इहां, तेथी फश्यो जुयंग ॥ वली आव्यो वेश्याघरे, नरथी थयो विहंग ॥ ५ ॥ एतो पाप तणा कुसुम, फल आगमशुं प्रमाण ॥ तो नरकें पडवुं सही, ए म निंदे अप्पाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ साधुजी नलें पधा
स्या आज ॥ ए देशी ॥

॥ अनंगसेनाना रागथी जी, रह्यो तिहां एक मा स ॥ मेल्ही उघाडुं पांजरुं जी, गइ किण काज विमा स ॥ १ ॥ नरेशर सांजल एह विचार ॥ अचरिजनो अधिकार, सुणतां हर्ष अपार ॥ न० ॥ पडहतणी उद्घोषणाजी, सांजली नगर मोझार ॥ तिहांथी उ डी आवियो जी, पडह छब्यो तेणि वार ॥ २ ॥ न० ॥ ते राजन हुं सूवटो जी, में सहु कह्यो विचार ॥ रा जा एहवुं सांजली जी, हर्षित थयो अपार ॥ ३ ॥ ॥ न० ॥ पगथी दोरो छोडियो जी, कुमर थयो तत

काल॥ सहुने अचरिज उपन्युं जी, थयो प्रमोद विशा
ल ॥ ४ ॥ न० ॥ हरखी कुमरी मदालसा जी, नय
णें नाह निहाल ॥ पाम्यो हर्ष त्रिलोचना जी, विर
हाग्नि दुःख टाल ॥ ५ ॥ न० ॥ परणावी बहु प्रेम
शुं जी, शेठ महेश्वरदत्त, सहस्रकला निज कन्यका जी॥
खरची बहुलुं वित्त ॥ ६॥ न० ॥ तीन नारी पुण्यें म
ली जी, सुरकन्या अवतार ॥ अनंगसेना चोथी थइ जी,
रूपतणो जंभार ॥ ७ ॥ न० ॥ राजा तेडी आरामिकी
जी, तेहने दीधी मार ॥ फूलमांहि नलिका धस्यो जी, पू
ठयो सर्पविचार ॥८॥ न० ॥ मालिनी कहे राजन सु
णो जी, तुम आगल कहुं साच ॥ समुद्रदत्त व्यवहारियो
जी, खोटो जेहवो काच ॥ ए ॥ न०॥ तेणें पापी मु
जने कह्युं जी, देइश तुज दीनार ॥ परखीने तुज पांच
शें जी, कुमर जणी तुं मार ॥ १० ॥ न० ॥ लोन्नें
मुज लक्षण गयां जी, में कीधुं ए काज॥ पानी मति
हुवे नारिने जी, केहनी नाणे लाज ॥ ११ ॥ न० ॥
राजा रोषातुर थयो जी, मारो पापी तेह ॥ मालणी प
ण मारो जइजी, हुकुम दियो नृप एह ॥ १२ ॥ न०॥ ते
लेइ मारण निसस्या जी, केहनी नाणे लाज ॥ करे राय
ने विनति जी, मकरध्वजनो पूत ॥ १३॥ न०॥ होण

हार निश्चें हुवे जी,एहोनो शो दोष ॥ कहे जिनह र्ष बावीशमी जी, ढालें नृप मनरोष ॥ १४ ॥न० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मूकुं नहीं ए जीवतां, एहनी करवी घात ॥ जाण्यो नहीं एणें एटलो, रायतणो जामात ॥ १ ॥ एक घर माकण परिहरे, न करे तास विनाश ॥ मु ज घरथी ए नवि टल्यां, बेनो करवो नाश ॥ २ ॥ वि नय करी नृपने कहे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ महा राय जवितव्यता, करवो एह विचार ॥ ३ ॥ वांक न कांइ शेठनो, मालिणी नहीं कांइ वांक ॥ टले नह जे विधि लख्या, सुख दुःखना शिर आंक ॥ ४ ॥ इं इ चंइ नागेंइ नर,मोहोटा जेह मुणिंद ॥ कियां कर्म सहु जोगवे, बूटे नही नरिंद ॥ ५ ॥ किणशुं कीजें आमणो, किणशुं कीजें रोष ॥ केहनो दोष न का ढियें, कर्मतणो ए दोष ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ मोरियाना गीतनी

॥ देशी ॥ राये राणा रमे रंकुआ ॥ ए देशी ॥

॥ पाय पडी नृप तणे रे कुमार, विनति करीय समजाविया जी ॥ एहनुं कीधुं पामशे एह, शेठ मा लण बे मेल्हावियां जी ॥ १ ॥ शेठनुं सहु धन

लीध,मालणी काढ्या निज देशथीजी ॥ पहेलां पण
नृप मनमां वैराग्य; राज्य ग्राहक सुत पण नथी जी
॥२॥ देइ जमाइने राज्यभंडार,राय चारित्र शुभ आद
ऱ्यो जी ॥ महेश्वरदत्त पण ऋद्धि समृद्धि, सहु देइ
शुद्ध संजम धऱ्यो जी ॥ ३ ॥ महेश्वरदत्त नृप कियो
विहार,संजम पाले निज निर्मलो जी ॥ शास्त्र सिद्धां
त भण्या गुरु पास, जेहनो यश थयो उज्जलो जी ॥
॥ ४ ॥ समुद्र पर्यंत थयुं नृप राज्य, चुल्ल हिमवं
त लगें आगन्या जी ॥ उत्तमचरित्र थयो मा
हाराज, जेहने चार घरणी धन्या जी ॥ ५ ॥ भ्रमरके
तुनी सांभलो वात, षष्ठिलक्ष राक्षसनो धणी जी ॥
तेणे नैमित्तिक पूछिया ताम, किहां मुज अरि नाखुं
उखणीजी ॥ ६ ॥ ते कहे सांभल राक्षस नाथ, पुत्री
तुज परणी मदालसा जी॥ पंच रतन तुज सार भंडा
र, तेह लइ गयो शुभ दिशा जी॥ ७॥ मोहोट पल्ली
नामें वेलाकुल, सकलतट तणो स्वामी थयो जी॥राय
विद्याधर सहु नम्या पाय,पुण्यथी राज्य मोहोटो लह्यो
जी॥ ८ ॥ सांभली राक्षस एह विचार, चिंतवे चितमां
एहवुं जी ॥ देखो अलंघ्यभवितव्यता एह, विधि ल

स्युं ते थयुं तेहवुं जी ॥ए॥ समुद्रमां शैलस्थितकूप ड
वार, देवता पण जइ नवि शके जी ॥ गहन पाताल
जुवनें तिहां जइ,परणी मुज कुमरी नूचरथके जी॥१०॥
पंचरत्न मुज जीवित प्राय, ले गयो हवे किश्युं कि
जियें जी ॥ ज्ञान नैमित्तकतणुं प्रमाण,नाग्य नूचर स
लहीजीयें जी ॥११॥एकलो शून्य द्वीपें हतो एह,तिहां
पण मनें जींत्यो एणे जी ॥ कहे जिनहर्ष पुण्यें फली
आश,ढाल त्रेवीशमी ए कहीज॥१२॥सर्वगाथा४६३॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे तो ए राजा थयो, पंचरतन सुप्रनाव ॥ ह
य गय पायक नट कटक, माहारो न लागे दाव ॥१॥
हवे फीपी हुं केम शकुं, केहनो राखुं शोष ॥ जे कि
रतारें वडा किया, तेहशुं केहो रोष ॥ २ ॥ प्राणें जा
स न पोहोंचियें, तेशुं किश्यो संग्राम ॥ तेहने नमियें
जाइने, तो विणसे नहीं काम ॥ ३ ॥ काज विचारी
जे करे, तेहनुं सीजे काम ॥ अविचार्युं धांधल पडे,
घटे महत्वने माम ॥ ४ ॥ हवे जमाइ ए थयो, क
लहतणुं नहीं गाम ॥ हसतां रोतां प्राहुणो, राखुं
किस्यो विराम ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ मोरा साहिब हो श्री
शीतल नाथ के ॥ ए देशी ॥

॥ एहवुं चिंतवी हो ते मूकी संग्राम के,राक्षसपति आव्यो तिहां ॥ करी प्रणिपत हो नृपने तजी मान के, स्नेह सहित मलिया इहां ॥ १ ॥ पुण्याइ हो अधिकी संसार के, उत्तमचरित्र तुमारडी ॥ मुज पुत्री हो अपछर अवतार के, विधियें तुज कारण घडी ॥ २ ॥ जोरावर हो सुर असुर नरिंद के, नावि आगल को नहीं ॥ फोकटनो हो वहीयें मन गर्व के, महारो न मे नाग्यो सही ॥ ३ ॥ तुं माहारी हो पुत्रीनो कंत के, थयो जमाइ माहरो॥ तुज सायें हो माहरे हवे प्रीत के, रूडो वांछुं ताहरो॥ ४ ॥ मन केरी हो नागी सहु नीति के, ससरो जमाइ बेहु मल्या ॥ मुज पुत्री हो सरिखो वरु एह के, मुह माग्या पासा ढल्या ॥ ५ ॥ पुत्रीने हो जइ मलियो बाप के, बाप संघातें पुत्री मली ॥ हियडाशुं हो नीडी हेत आणी के, पुत्रीनी पूगी रली ॥६॥ शिर धारी हो आणा लंकेश के,उत्तम चरित्र नरेशनी ॥ लंकानुं हो देइने राज्य के, देइ नलामण देशनी ॥ ७ ॥ मोकलीयो हो राक्षसपति राय के,सहुने आणंद उपनुं ॥ एक दिवसें हो बेग द

रवार के, दूत आव्यो तिहां नृपनो ॥ ८ ॥ आणीने हो रायने दियो लेख के,राय उघाडी वांचीयो ॥ मांहे लखिया हो छे बोल अमोल के,जेहथी टाढो हुवे हियो ॥ ए ॥ स्वस्तिश्री हो प्रणमी जगदीश के, वाणारसीथी मन रसे ॥ मकरध्वज हो लिखितं माहाराय के, उत्तमचरित्र कुमर दिसें ॥ १० ॥ आलिंगे हो हरखें सस्नेह के, कुशल खेम वरतुं इहां ॥ तुमकेरा हो वांछुं सुखखेम के, कागल दीयो छो जिहां ॥ ११ ॥ जिण दिनथी हो तुं चाल्यो परदेश के,खबर करावी में घणी ॥ दोडाव्या हो केडें असवार के,निरत न पामी तुम तणी ॥ १२॥ चाल्या केडे हो पुरपाटण गाम के,पर्वत द्वीप नमंतडा ॥ किहां न सुणी हो वत्स ताहरी वात के,निशि दिन वाट जोवंतडां ॥ १३ ॥ निःस्नेही हो तुं तो थयो पुत्त के,मात पिताने अवगणी ॥ मेल्ही ने हो गयो तुं निरधार के, हियडे अग्नि दीधी घणी ॥ ॥ १४ ॥ छोरुनें हो मन नांहिं दुःख के, मात पिता दुःख करी मरे ॥ पूरी थइ हो चोवीशमी ढाल के, कही जिनहर्ष नली परें ॥ १५ ॥ सर्वगाथा॥ ४८३॥

॥ दोहा ॥

॥ तथा अहं वार्द्धक थयो, तुज विजोग न खमा

य ॥ तुज विरहें व्याकुल थयो, दिवस दोहिलो जाय ॥ १ ॥ तुजनें छंमे न दूहव्यो, कुवचन न कह्युं कोइ ॥ रीसावी नीकली गयो, ते पछतावो होय ॥ ॥ २ ॥ राज धुरंधर तुं कुमर, तुज उपर सहु मांम ॥ निराधारां मूकी गयो, नलो गयो तुं ठांमि ॥३॥ लोक मुखें में सांनल्यो, मोटपल्ली वेलाकुल ॥ उत्तमचरित्र राजा थयो, नाग्य थयुं अनुकूल ॥ ४ ॥ गाढा र लीयायत थया, उल्लसीयां अम प्राण ॥ पण लेख दर्शीणें आवजे, जेम थाये कल्याण ॥५ ॥ हुं घरडो बूढो थयो, मुजथी न चाले राज ॥ राज देइने तुज नणी, हुं सारुं निज काज ॥ ६ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ कलालणी तें माहारो राजन मोहियो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरजी लेख वांची मन रंगशुं हो लाल, ढील म करजे पुत्त ॥ कु० ॥ पाणी अपीत पधारजो हो लाल, आव्यां रहेशे सूत ॥ कु० ॥ १ ॥ वेहेलो अहिंयां आवजे हो लाल ॥ कु० ॥ तुज विण शूनो देशडो हो ल, तुज विण शूनुं राज्य ॥ कु० ॥ तुज विण शूनो दग डो हो लाल, आव्यां रहेशे लाज ॥ कु० ॥ २ ॥व० ॥ कु० ॥ राज धुरंधर तुं सही हो लाल, तुज विण के

वुं राज ॥कु०॥ तुं कुलदीपक सेहरो हो लाल,तुं सहुनो शिरताज ॥ कु०॥३॥व०॥कु० ॥ जो चाहे सुख मो न णी हो लाल, वांछे मुज कल्याण ॥ कु० ॥ तो वहे लो आवे इहां हो लाल,टाढा होय मुज प्राण ॥कु० ॥४॥ व० ॥कु० ॥ भाग्यवंत तुं दीकरो हो लाल, विन यवंत गुणवंत ॥ कु० ॥ मावित्रांने मूकीने हो लाल, बेगो जइय निचिंत ॥ कु० ॥ ५ ॥ व० ॥ कु० ॥ रा ज्य लह्युं अमें सांभल्युं हो लाल,मोटपह्नी वेलाकुल ॥ कु०॥ मनमां रलियायत थइ हो लाल, भाग्य थ युं अनुकूल ॥ कु० ॥ ६ ॥ व० ॥ कु० ॥ तुजनें शुं लखियें घणुं हो लाल, तुं सहु वातें जाण ॥ कु० ॥ थोडामां समजे घणुं हो लाल, आव्या तणां वखा ण ॥ कु० ॥ ७ ॥ व० ॥ कु० ॥ हैयुं भराणुं हरख शुं हो लाल, वांची सहु समाचार ॥ कु० ॥ .ततक्ष ण बूटी लोयणें हो लाल, आंसू केरी धार ॥ कु० ॥ ॥ ८ ॥ व० ॥ कु० ॥ बाप भणी दुःख में दियो हो लाल, हुं थयो पुत्त कपुत्त ॥ कु०॥ खाये हियडुं फो लीने हो लाल, माय तणो जिम लूत्त ॥ कु० ॥ ए ॥ व०॥कु०॥मंत्रीसर परधानने हो लाल,राय भलावी रा ज॥कु०॥नारी चार निज सैन्यशुं हो लाल,चाल्यो स्व

छु लेइ साज ॥ कु० ॥ १० ॥ व० ॥ कु० ॥ वाणार सी नयरी तणी हो लाल, लशकर साथें अखूट ॥ कु० ॥ अखंम प्रयाणें वाटमां हो लाल, चलि आव्यो चित्रकूट ॥ कु० ॥ ११ ॥ व० ॥ कु० ॥ म हासेन राजा सांनल्यो हो लाल, उत्तम चरित्र नरिं द ॥ कु० ॥ आव्यो ठे सीमो जइयें हो लाल, मलियें मन आनंद ॥कु०॥१२ ॥व० ॥ कु० ॥ कटक सुनट शुं जइ मल्यो हो लाल, आव्या नगर मऊार ॥ कु० ॥ ढाल थइ पच्चवीशमी हो लाल, कहे जिनहर्ष वि चार ॥ कु० ॥ १३ ॥ व० ॥ सर्वगाथा ॥ ५०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ माहासेन हेतशुं मल्यो, कर जोडी कहे एम ॥ मित्र नलें पाउ धारिया, वर्त्ते ठे सुख खेम ॥१ ॥ तुम सुपसायें कुशल ठे, आव्यो मलवा काज ॥ कृ पा करि मुज उपरें, माहाराजा ल्यो राज ॥ २॥ मेह तणी परें ताहरी, निशदिन जोतो वाट ॥ मुज पुण्यें तुं आवियो, आज थया गहगाट ॥ ३ ॥ उत्तमचरित्र नरिंदने, राजा देई राज ॥ पोतें संयम आदस्यो, सा ध्यां आतमकाज ॥ ४ ॥ केटला एक दिन तिहां र ह्यो, मलवाने मेदपाट ॥ आण मनावी आपणी,

लाट जोट करणांट ॥ ५ ॥ कामदार पोता तणा, मे
ल्ही चल्यो नूपाल ॥ आव्यो गोपाचलगिरें, केवी के
रो काल ॥ ६ ॥ वीरसेन राजा थयो, कटकतणी सु
णी वात॥ चार अक्षोयणी सैन्यशुं,परवरियो सुप्रजात
॥ ७ ॥ सीमा आवी उतर्यो, मूक्यो सन्मुख दूत ॥दू
त कह्युं मत आवजे, जो थाये रजपूत ॥ ८ ॥ जो
कांकल करवा मतें,राखे जो रजवट्ट॥तो वहेलो थइ आ
वजे, थाशे बहु खलखट्ट ॥ ए ॥

॥ ढाल उवीशमी ॥ मुज लाज वधारो रे, तो राज प
धारो रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणि वयण विचित्रो रे,ए तो थयो शत्रो रे,हवे
उत्तमचरित्रो,युद्ध करण चढ्यो रे ॥ बे लशकर मली
यां रे, मांहो मांहे अडियां रे, सहु सुनट आफलि
या, कांकल ऊपड्यो रे ॥ १ ॥ रण घोर मंमाणुं रे,
जाय न उंफाणुं रे, उखाणो खोजा पाडा, नेंसा आ
थडे रे ॥ शर चिहुं दिशि छूटे रे, बगतर कस तूटे रे,
वच्चें नाल वछूटे, धरती धडहडे रे ॥ २ ॥ हथनाल
हवाइ रे, आवाज मचाइ रे, वच्चें आवी बरछीना घा
व,लागे घणा रे ॥ सूरा एक फूफे रे,गयघड आलूफें रे,
रवि सूफे नही, अंधारुं बिहामणुं रे ॥ ३ ॥ घणा रो

षें मारे रे, तींखी तरवारें रे, जे हारें ते जायो नही, र
जपूतणी रे ॥ हाको हाक वाजे रे, गयवीर जेम गाजे
रे, रखे लाजे मात, परियागत आपणी रे ॥४ ॥ खल
खंभे विहंभे रे, पग एक नं ढंभे रे, वली आवी मंभे
रे, साहामा अरि हैये रे ॥ देखीने कोपे रे, जला क्रो
धा टोपें रे, नवि लोपे रणवट, पग पाछा नवि दिये
रे ॥ ५ ॥ जूझे एम शूरा रे, हथियारें पूरा रे, बलवं
त सनूरा, घाव साहामा लीये रे ॥ राणीना जाया रे, ह
णवाने धाया रे, तेम आया रे राया, जयहाथा दीये
रे ॥ ६ ॥ निशाणें घाय रे, वाजे शरणाय रे, सिंधूडे
मचाइ रे, वेढ बिहामणी रे ॥ तरवारें त्राछे रे, नालं
ता पाछे रे, तेम शूरा छे ते जूझे, साम्हे अणी रे ॥
॥७॥ उलटचा वरसाला रे, वहे लोही खाला रे, म
छराला मतवाला, हव मेल्हे नही रे ॥ घायें घूमंता रे, के
इ धड जूझंता रे, रुंभ मुंभ हसंता, जयकारी सही रे ॥
॥ ८ ॥ माटीनुं घाय रे, हथियारसबाह रे, मुज सा
मो आय रे, जो बलवंत छे रे ॥ स्वामी बपुकारे रे, तुं वै
री संहारे रे, शूरोशिरदार रे, तुं सम कोण अछे रे ॥
॥ए॥ लखगाने लडाया रे, लखगाने लडिया रे, र
डवडीया रे, तुंभ घणां सुभटो तणा रे ॥ कांकल देखेवा

रे, जोगिणी वल देवा रे, तेम करण वल लेवा रे, नृत फरे घणां रे ॥ १० ॥ एम महायुद्ध मातो रे, वारे न हीं थातो रे, संसरातो रे, पाछो कोइन उसरे रे॥ पुण्याइ जोरें रे, ते अधिके तोरें रे, निज पराक्रम फोरे रे, चिंते तेम करे रे ॥ ११ ॥ नृप उत्तमचरित्रो रे, बहु पुण्यविचित्रो रे, निजशत्रु रें बांध्यो, झाली जीवतो रे ॥ वीरसेन लजाणो रे, मुजथी सपडाणो रे, मुज ली धो घाणो रे, जे सबलो हतो रे ॥ १२ ॥ निज आण मनायो रे, छोडयो ते रायो रे, वैराग्य आयो रे, मन वीरसेनने रे ॥ छवीशमी ढालें रे, जिनहर्ष निहाले रे, स हु टाले रे, द्वेषने निज मनें रे॥१३॥ सर्वगाथा॥५२४॥

॥ दोहा ॥

॥ मान मलिन थयुं माहरुं, जो रह्यो राजमका र॥ सुखकारण जे जाणियें, ते सहु दुःख दातार ॥ १ ॥ संपदमां आपद वसे, सुखमांहे दुःख वास ॥ रोग वसे निज जोगमां, देह मरण आवास ॥ २ ॥ ए संसारी जीवने, बंधन छे धन दार ॥ मूरख माने सुख करी, मधुलेपी खड्गधार ॥ ३॥ मान रहे नहीं केहनुं, एणे संसार मझार ॥ जींती कोण जाइ शके, एम नृ

प करे विचार ॥४॥ पहेले हुं चेत्यो नहीं, धर्म नखे

ल्यो दाव॥तो आवी उत्तमचरित्र, नेंजे दीधो घाव॥५॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ चतुर सनेही

मोहनां ॥ ए देशी ॥

॥ ए कारण वैराग्यनो, रायतणे मन आयो रे ॥
राज्यऋद्धि ठोडी करी, करे धर्मउपायो रे ॥१ ॥ ए०॥
पुण्यवंत नर एह छे, ए नर अनमी नामें रे॥तो माहारी
प्रभुता हवे, एहिज नृपति पामे रे ॥ २ ॥ ए० ॥ वी
रसेन नृप एहवो, मनमां करिय विचारो रे ॥ उत्तमच
रित्र नणी कहे, ए ल्यो राज नंमारो रे ॥३ ॥ए० ॥ हुं
दीक्षा लेइश हवे, ठोडी राज्यनंमारो रे ॥ एह लख्युं
तुज नाग्यमां, संग्रह्य तुं हितकारो रे ॥ ४॥ए०॥ उत्तम
चरित्र नरिंदने, देइ राज्यविख्यातो रे ॥ वीरसेन संय
म लियए, सहस्रपुरुष संघातो रे ॥ ५ ॥ ए० ॥ केट
लाएक दिन तिहां रही, देश मनावी आणो रे ॥
पुण्यतणे सुपसाउले, पग पग लहे निरवाणो रे ॥ ६ ॥
ए० ॥ चतुर राय तिहांथी चल्यो, पोताने पुर आयो रे
॥ बापें बहु महोत्सव करी, पुरप्रवेश करायो रे ॥७॥
ए० ॥ कुमर पिता पायें नम्यो, पुत्रपिता हेतें मलिया
रे॥ जननी उरशुं नीडियो, आज मनोरथ फलियारे॥८॥

ए०॥ चार वहू पाये पडी, सासु दे आशीषो रे ॥ अ
विचल जोडा तुम तणी, फलज्यो आश जगीशो रे
॥ ए ॥ ए० ॥ मात पिता हर्षित थयां, हर्ष्यो सहु
परिवारो रे ॥ राय करे अनुमोदना,ऐ ऐ पुण्य अपारो
रे ॥ १० ॥ ए० ॥ पुत्र गयो थयो एकलो, ए ऋद्धि
संपद पामी रे ॥ नव निधि जिहां जावे तिहां, शा
पुरुषा अनुगामी रे ॥ ११ ॥ ए० ॥ उत्तम चरित्र
कुमारनें, शुन मूहूरत शुन दीसें रे ॥ मकरध्वज नृ
पस्वहथें, दीधुं राज्य जगीशें रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ रा
ज्य करो सुत ए तुमें, अमें हवे संयम लीजें रे ॥ चोथो
आश्रम आवियो, आतम साधन कीजें रे ॥ १३ ॥
ए० ॥ लेई सहुनी आज्ञा, व्रत लीधुं नृपालो रे ॥
कहे जिनहर्ष उत्साहशुं, सत्तावीशमी ढालो रे ॥१४॥
ए० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चारे राज्य स्वामी थयो, उत्तमचरित्र नरिं
द ॥ पूरव पुण्य पसाउलें, दिन दिन अधिक आणं
द ॥ १ ॥ चारे अपछर सारिखी, चारे चतुर सुजा
ण ॥ चारे नारी पतिव्रता, चारे माने आण ॥ २ ॥
चालीश लक्ष अश्व जेहनें, चालीश लक्ष गजदोड ॥

चालीश लक्ष रथ रूयडा, पायक चारें कोड ॥ ३ ॥ चालीश कोडि ग्रामाधिपति, ऋद्धितणो नहीं पार ॥ चार राज्य सुख नोगवे, दिन दिन अधिक विस्तार ॥ ४ ॥ जिन प्रासादं कराविया, कीधी तीरथ जात्र ॥ अकरा कर सहु मेलिया, पोष्या उत्तम पात्र ॥ ५ ॥ बिंब नराव्यां जिनतणां, पुस्तक नख्यां नंमार॥साहमी वत्सल पण कीयां,पर उपगार अपार ॥६॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥ चूनडीनी ॥ अथवा ॥
प्राणी वाणी जिनतणी ॥ ए देशी ॥

॥ एम धर्म करंतां अन्यदा, आव्या तिहां केवल धार रे ॥ वांदण काजें नृप चालियो, उलट धरि चित्त अपार रे ॥ १ ॥ ए० ॥ पांचे अनिगम नृप साचवी, वांदी बेंग मुनि पास रे ॥ मुनिवर दे मीठी देशना, सांजलतां अंग उल्लास रे ॥ २ ॥ ए० ॥ संसारी जीव सुणो तुमो,जिन धर्म करो तुमें नायो रे ॥ संसार सायरमां बूडतां, तरवानो एह उपायो रे ॥ ३॥ ॥ ए० ॥ संसार अनंत नमंतडां, मानवनव लाधो एह रे ॥ दश दृष्टांतें करि दोहिलो, चिंतामणि सरिखो जेह रे ॥ ४ ॥ ए० ॥ वली श्रुत सांजलवुं दोहिलुं, सुणतां उतरे मनकाट रे ॥ सांजलतां श्रुत

हियडा तणां, उघडे अज्ञान कपाट रे ॥ ५ ॥ए० ॥ सद्दहणा पण दोहिली, जीवने आवतां जाण रे ॥ जेम जल न रहे काचे घडे, तेम श्री जिनवरनी वाण रे ॥ ६ ॥ ए० ॥ वीर्य फोरववुं दोहिलुं, संजमने विषय सुजाण रे ॥ ए चार अंग छे दोहिलां, पामी ने करो प्रमाण रे ॥ ७ ॥ ए० ॥ एतो धर्मवेलाएं जीवने, आलस आवे बहु नांति रे ॥ आरंन वेलायें जागतो, निशदिन करवानी खांति रे ॥ ८ ॥ ए० ॥ जे जीव हणे बोले मृषा, ले अदत्त अब्रह्मशुं चित्त रे ॥ प रिग्रह मेले बहु नांतिनो, डुर्गतिशुं तेहने प्रीत रे ॥ ॥ ए ॥ ए० ॥ दूर करी तेरे काठिया, क्रोधादिक चार कषाय रे ॥ छिपी पांचेंडिना नोगने, जिनधर्म सोहलो थाय रे ॥ १० ॥ ए० ॥ कोण मात पिता केहनी सुता, केहना सुत केहनी नार रे ॥ डुर्गति जातां इण जीवने, कोई नही राखणहार रे ॥ ११ ॥ ए० ॥ सहु कोइ स्वारथनुं सगुं, स्वारथ पाले सहु नेह रे ॥ जबही स्वारथ पहोंचे नही, तो तुरत दिखावे छेह रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ मूरख कहे माहरो माहरो, ए धन ए घर परिवार रे ॥ प रनव जाये जीव एकलो, पण कोय न जाये लार रे ॥ १३ ॥ ए० ॥ तो खोटी ममता मूकीने, करो धर्म

थइ नजमाल रे ॥ जिनहर्ष दीधी मुनिदेशना, अढा वीशमी ए ढाल रे॥ १४॥ए०॥ सर्वगाथा ॥ ५६३॥

॥ दोहा ॥

॥ दीधी एणि परें देशना, सांजली सहुको लोक ॥ परम प्रमोद थयो हवे, रवि दर्शन जेम कोक ॥ १ ॥ राजा पूछे मुनि प्रतें, विनय करी कर जोड ॥ जगवन् केणे कर्मै करी, पामी संपद कोड ॥ २ ॥ सायर मांहे केम पड्यो, मैनकघर रह्यो केम ॥ शुक थइ गणिका घर रह्यो, कहो मुजने थयो जेम ॥ ३ ॥ केवल ज्ञानी मुनि कहे, सांजल राय सुजाण ॥ कीधां कर्म न छूटियें, जोगवियें निरवाण ॥ ४ ॥ जे जेहवां कीजें कर्म, तेथी फल प्रापत्त ॥ पूरवनव सुण्य तादृशो, लहि संपत्त विपत्त ॥५ ॥

॥ ढाल उंगणत्रीशमी ॥ पास जिणंद जुहारियें ॥ ए देशी ॥ .

॥ सुण राजा केवली कहे, हिमवंत नूमि सुविशालो रे ॥ सुदत्तग्रामा नामें जलो, धनधान्य समृद्धि रसालो रे ॥ १ ॥ सु० ॥ धनदत्त कौडुंबिक वसे, ते चार वधू नरतारो रे ॥ पहिलां द्रव्य हतुं घणुं, कालें गयो धनविस्तारो रे ॥ २ ॥ सुं० ॥ दारिद्रनो पासो थ

यो, तिहां आव्यां चार मुनीशो रे ॥ चोरें लूट्यां क
लपडां, टाढें धूजे निशि दीसो रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ धनद
त्त नइक नावियो, अनुकंपा मनमां आणी रे ॥ वस्त्र
प्रावरण पोता तणां, वहोराव्यां उत्तम प्राणी रे ॥४॥
॥ सु० ॥ चारे स्त्री अनुमोदना, कीधी प्रिय धन अव
तारो रे ॥ धनदत्त तेणें पुण्यें करी, तुं राय थयो शिर
दारो रे ॥ ५ ॥ सु० ॥ चार राज्य पाम्या इहां, ते
चारे वस्त्र प्रनावें रे ॥ पांच रत्न बहु धन लह्यां, व
लि नारी चार सुहावे रे ॥ ६ ॥ सु० ॥ तेणे कर्में
तुं मीननें, पेटें वसियो कोइ कालो रे ॥ मैनिक घर प
ण तुं रह्यो, ए कर्म तणो सहु चालो रे ॥ ७॥ सु० ॥
कोइएक नव तें मुनि नणी, मेहेलो देखी सूगाणो
रे ॥ गंधाए मत्स्य सारिखो, ते कर्म तिहां बंधाणो रे ॥
॥ ८ ॥ सु० ॥ सहस्रतमे पहिले नवें, तें पोपट पंजर
घाल्यो रे ॥ ते पापें पोपट थयो, तुज कर्में ए फ
ल आल्यो रे ॥ ए ॥ सु० ॥ अनंगसेना पूरव नवें,
निज सहियर कृत शणगारो रे ॥ आवो वेश्या बहेन
डी, हांसी कीधी तेणिवारो रे ॥ १० ॥ सु० ॥ तेणें
कर्में वेश्या थइ, राजादिक सुणो वृत्तांतो रे ॥ ए ए
कर्मविटंबना, पाम्यो वैराग्य महंतो रे ॥ ११ ॥

सुण कारणकेवली कहे ॥ ए आंकणी ॥ राज्य दीयुं निज पुत्रनें, चारे नारि संघातें रे ॥ ऋद्धि राज्यादिक गेडिने, संयम लीधो मन खांतें रे ॥ १२ ॥सु० ॥ चारित्र पाली उजलुं, तप करि कर्म खपायो रे ॥ अंतकाल अणसण करी, सुरलोक तणां सुख पायो रे ॥ १३ ॥ सु० ॥ महाविदेहें सीऊशे, नृप उत्तमचरित्र कुमारो रे ॥ वस्त्रदानथी सुख लह्यां, द्यो दान सुणी अधिकारो रे ॥ १४ ॥ सु० ॥ नूत वेद सायर शशी १७४५, आशो शुदी पंचमी दिवसें रे ॥ उत्तमचरित्र कुमारनो, में रास रच्यो सुजगीशें रे ॥ १५॥सु०॥ श्री जिनवर सुप्रसादथी, श्रीपाटण नयर मऊारो रे ॥ गाथा सत्याशी पांचशें, उगणत्रीशमी ढाल उदारो रें ॥ १६ ॥ सु० ॥ श्री खरतर गछ गुण निलो, श्री जिनचंद सूरिंदो रे ॥ वाचक शांतिहर्ष गणि, जिन हर्ष सदा आणंदो रे ॥ १७ ॥ सु० ॥ स० ॥ ५८५ ॥

इति वस्त्रदानोपरि श्री उत्तम चरित्रकुमाररास संपूर्णः ॥ ग्रंथा ग्रंथ ॥ ७०१ ॥